॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्री श्री भागवत पत्रिका

वर्ष—८ राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी एकमात्र वाहिका संख्या—(९-१०)
प्रथम वर्ष-पूर्ति विरह-विशेषांक— ६

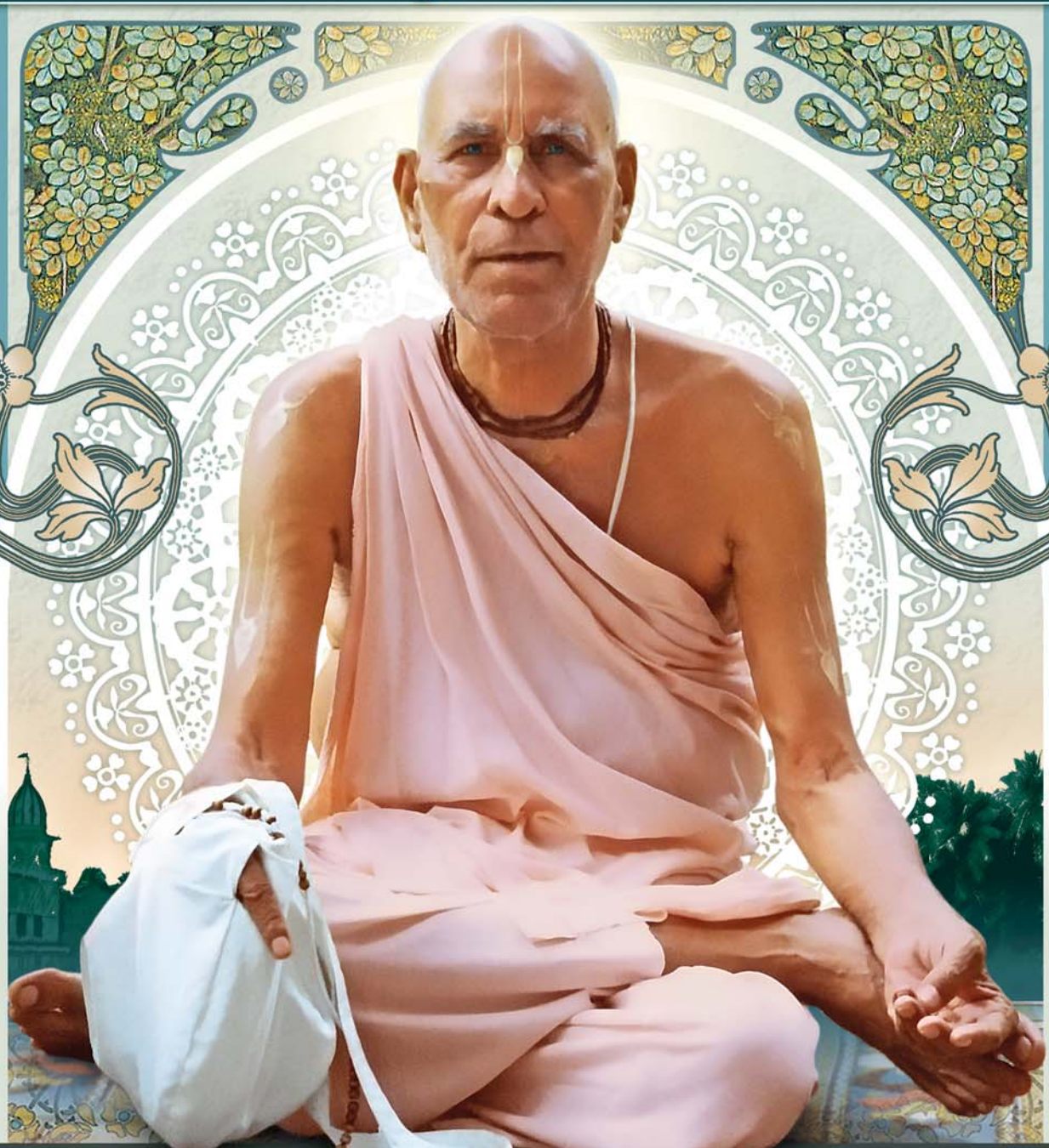

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

॥श्रीश्रीगुरु–गौराङ्गौ जयतः॥

वर्ष x 8 | श्रीगौराब्द ५२५, केशव–नारायण मास
वि.सं.२०६८, अग्रहायण–पौष मास; सन्२०११, ११नवम्बर–९जनवरी | संख्या x 9–10

विरह–विशेषाङ्क (संख्या—६)

विषय-सूची

श्रीनारायणगोस्वामि–विरहाष्टकम् ४
श्रीवंशीवदन दास ब्रह्मचारी

गुरुपादपद्मके अप्रकटका दिन ही उनके प्रकट होनेका दिन.....९
श्रीश्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकु

विरह–तत्त्व.....१४
श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

विरह–उत्सवका उद्देश्य—वक्तृता, कीर्तन, प्रबन्ध आदिमें कपट विरह–वेदना प्रदर्शित करना नहीं.....१९
श्रीश्रीमद्भक्तिप्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज

सेवाके माध्यमसे ही विरहकी अनुभूति.....२४
श्रीश्रीमद्भक्तिकमल मधुसूदन गोस्वामी महाराज

श्रीगुरुपादपद्मके अप्रकट होनेपर दसों दिशाएँ अन्धकारमय.....३०
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज

विरहोत्सव.....३७
साप्ताहिक गौड़ीय वर्ष—१०, संख्या—४४ से अनुवादित

विरह–व्यथित व्यक्तिकी चित्तवृत्ति.....४१
श्रीपाद अनादिकृष्ण भक्तिशास्त्री

भगवान् एवं गुरुपादपद्मके विरहमें जीवन धारण करनेका वास्तविक उद्देश्य.....४४
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

करुणामय श्रील प्रभुपाद.....४९
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त त्रिविक्रम गोस्वामी महाराज

वैष्णवों द्वारा प्रदत्त पुष्पाञ्जलि—४.....५२

गौड़ीय-दर्शनमें विरह.....५३
श्रीमद्भक्तिसर्वस्व गोविन्द महाराज

आश्रितजनों द्वारा प्रदत्त पुष्पाञ्जलि—१.....५७

वाणी–वैशिष्ट्य सम्पद—४.....१३९
[श्रील गुरुदेव और विरह–तत्त्व]

विरह–भजन.....१४०

विरहमें अतिमर्त्य चरित्रकी कतिपय स्मृतियाँ.....१४९

श्रीगुरुपादपद्मके अन्तरङ्ग सेवकके विरहमें मुग्धता.....१५९

श्रील गुरुदेवकी अस्वस्थ–लीला एवं अप्रकट–लीलाका अप्राकृत–विचार तथा उसकी चमत्कारिकता.....१६१
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

विश्व प्रचार मानचित्र.....१६४

श्रील गुरुदेवका प्रथम–वर्षपूर्ति विरह–महोत्सव.....१६९

विरह–संवाद.....१७३

जय जय श्रीगुरु प्रेम–कल्पतरु.....१७६

विरह-विशेषाङ्क (संख्या-६)

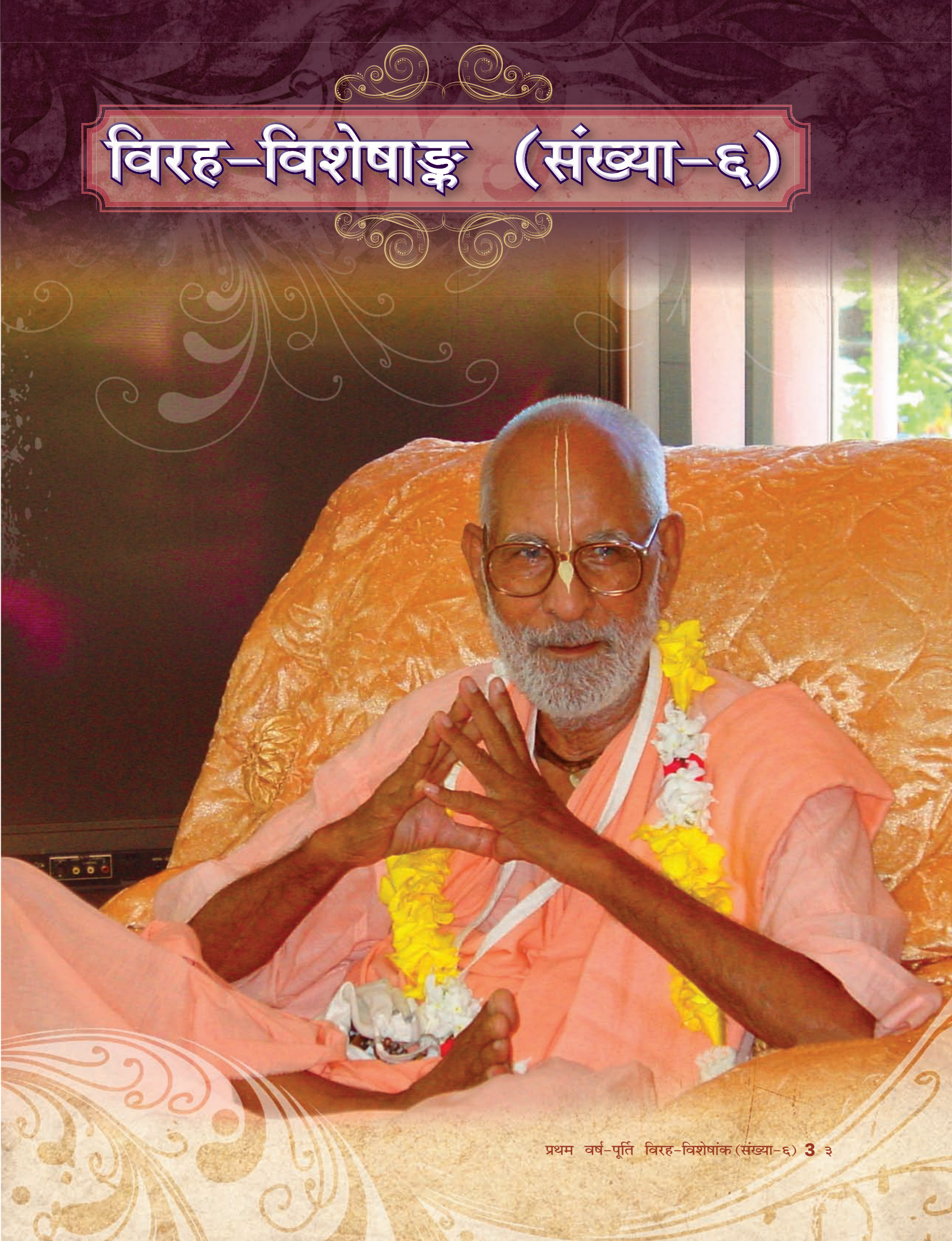

श्रीनारायणगोस्वामि-विरहाष्टकम्

श्रीवंशीवदन दास ब्रह्मचारी

[श्रीजगन्नाथाष्टककी भाँति शिखरणी-छन्दमें गान किया जा सकता है]

सदा श्रीगौराङ्गारुणचरणयुग्मेऽतिललिते
यदीया सद्दृष्टिर्जनयति रतिं शिष्यमनसि।
सगोस्वामी श्रीमान् विबुधवर नारायणगुरुः
गुरुर्देवः किं मे नयनसरणौ भास्यति पुनः॥ १॥

जिनकी कृपादृष्टिमात्रसे ही शिष्योंके मनमें सदाके लिए श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके अतिकोमल अरुणचरणयुगलमें रति उत्पन्न हो जाती है, विबुधजनों (विद्वानों) में श्रेष्ठ ऐसे श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी गुरुदेव क्या मेरे नयनपथमें पुनः उद्भासित (प्रकटित) होंगे?॥ १॥

युगाचार्यत्वेन प्रमुखविबुधैर्यो निगदितः
सुबीजं यो भक्तेर्निरवपत वैदेशिक हृदि।
स भक्तानां बन्धुर्गुरुचरण-सेवासुनिपुणः
गुरुर्देवः किं मे नयनसरणौ भास्यति पुनः॥ २॥

जो व्रज-मण्डलके प्रमुख पण्डितोंके द्वारा 'युगाचार्य'-उपाधिसे विभूषित हुए हैं, जिन्होंने पाश्चात्य देशवासियोंके हृदयमें भी उन्नत-उज्ज्वल-रसरूपी भक्तिका सुबीज रोपित किया है, जो अपने गुरुदेवकी चरणसेवामें सुनिपुण हैं तथा भक्तोंके प्रति जिनकी विशेष सेवावृत्तिको देखकर जिन्हें उनके गुरुदेवने 'भक्तबान्धव' पदसे अलङ्करित किया है, ऐसे श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी गुरुदेव क्या मेरे नयनपथमें पुनः उद्भासित होंगे?॥ २॥

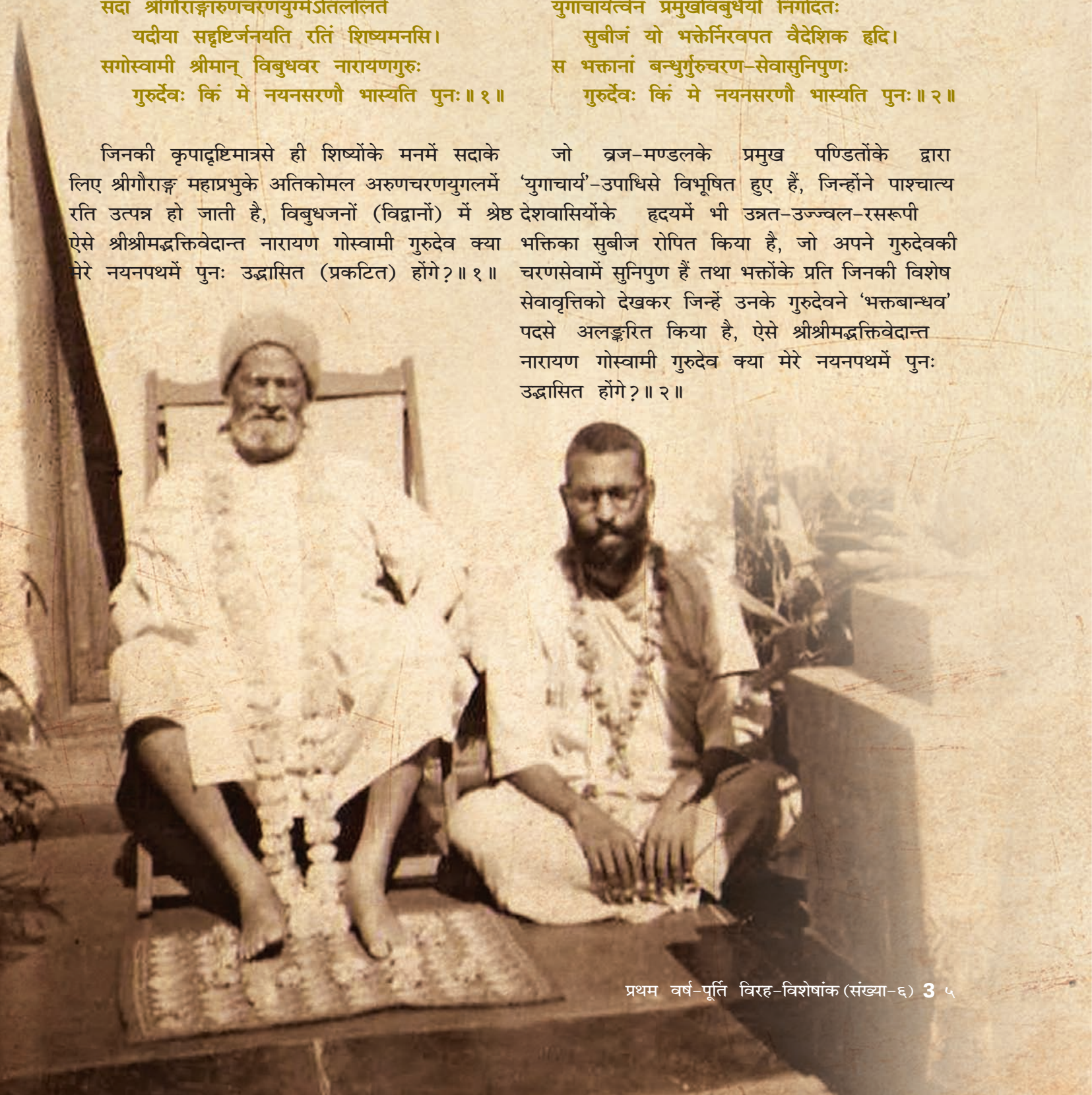

गुरुपादपद्मके अप्रकटका दिन ही उनके प्रकट होनेका दिन

श्रीश्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपाद

['आमार प्रभुर कथा' नामक शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराजकी विरह-तिथिके उपलक्ष्यमें प्रदत्त वक्तृताके कु

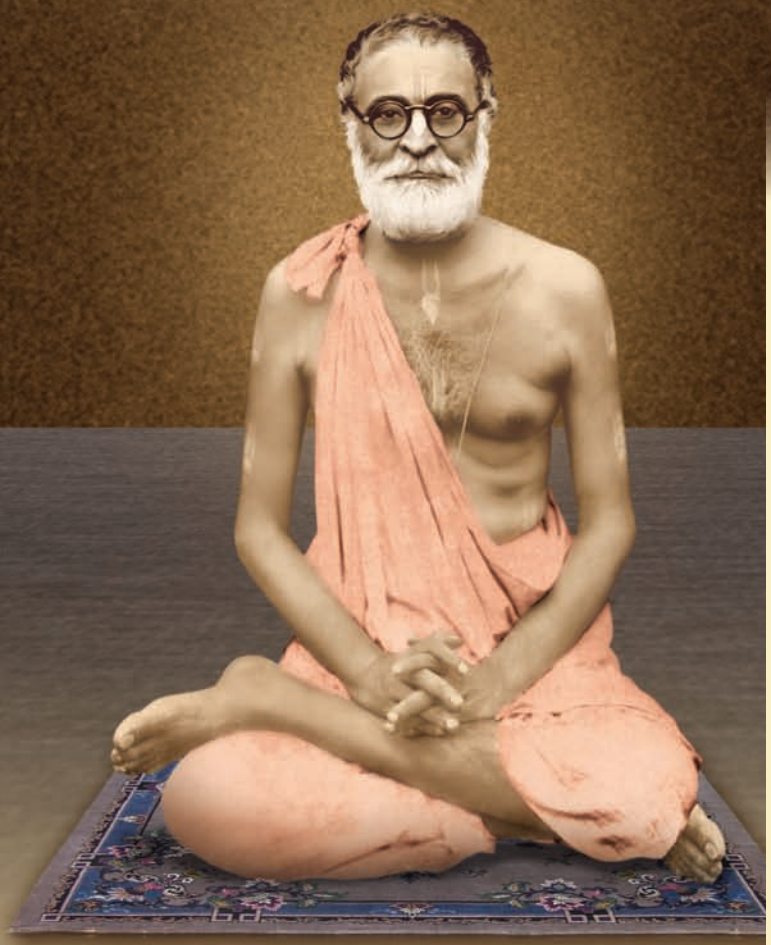

गुरुपादपद्मकी अतुलनीय दयाके कीर्त्तन द्वारा ही गुरुपूजा सम्भवपर

मेरे श्रीगुरुपादपद्म—जिनका आलेख्य (चित्रपट) आप लोग देख रहे हैं, वे इस जगत्के किसी भोग्य विषयके उपदेशक नहीं हैं, दूसरी ओर वे ही इस जगत्की सभी बातोंके एकमात्र अभ्रान्त मीमांसक हैं। किन्तु, क्योंकि मैं वञ्चित तथा पतित हूँ, इसलिए मेरी अपनी ही दुर्बलताके कारण गुरुपादपद्मके सभी विचार मेरे हृदयमें प्रविष्ट नहीं हुए। गुरुपादपद्मकी कृपासे जो सब विचार मेरे कानोंमें प्रविष्ट हुए हैं, उन सभीको बोलनेके लिए मेरी करोड़ों-करोड़ों जिह्वाएँ हों —करोड़ों-करोड़ों मस्तक हों—करोड़ों-करोड़ों वर्षोंकी परमायु हो—जिससे मैं उन करोड़ों-करोड़ों जिह्वाओंसे, करोड़ों-करोड़ों मस्तकोंसे, करोड़ों-करोड़ों वर्षोंमें अनन्त विश्व-ब्रह्माण्डोंमें अपने

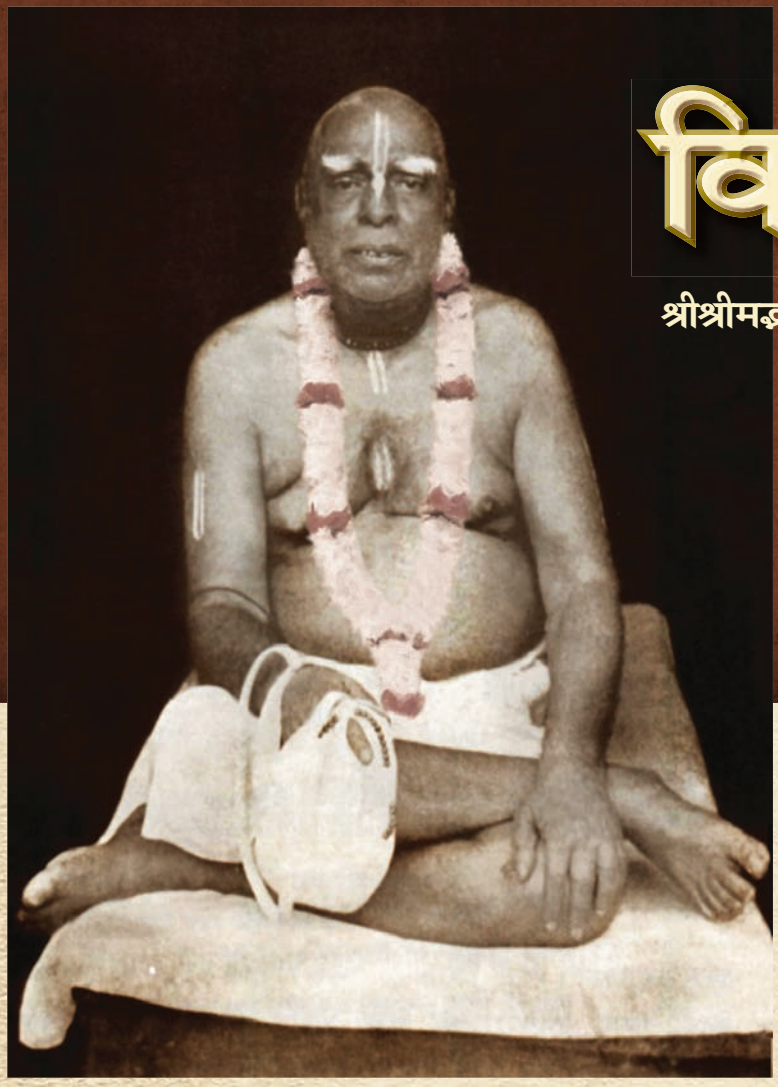

विरह-तत्त्व

श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

[श्रील भक्तिविनोद ठाकु
२६/६/१९४९ को, श्रीउद्धारण गौड़ीय मठ,
चुँचुड़ामें प्रदत्त वक्तृता]

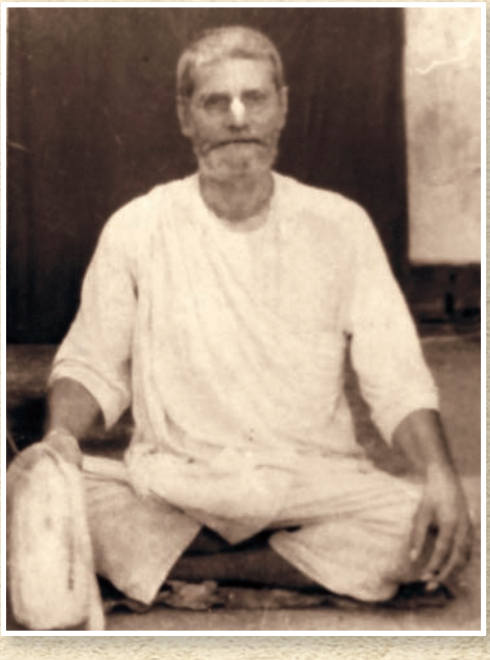

विरह हृदय-विदारक नहीं, अपितु आनन्ददायक

आज ठाकु शुभ-तिरोभाव-तिथि अथवा विरह-तिथि है। इस विरह-तिथि पालनके उपलक्ष्यमें हम प्रतिवर्ष उनके भुवन-पावन जीवन-चरित्रका कीर्त्तन करते हैं। आप सभीने इन महापुरुषकी अतिमर्त्त्य जीवनीके विषयमें बहुतबार बहुतसे दृष्टिकोणोंसे अथवा बहुतसे स्थानोंपर श्रवण किया है। यहाँ एक विषय विशेष ध्यान देने योग्य है कि प्रतिवर्ष इस विरह-तिथिका समागम हुआ करता है और प्रतिवर्ष ही वैष्णवगण अत्यन्त आदरके साथ इस तिथिपर महा-महोत्सवका पालन करते हैं। विरह जीवमात्रको ही व्यथित करता है, अतएव प्रतिवर्ष ही व्यथित होनेके लिये इतना आयोजन करनेकी क्या आवश्यकता है? हृदय विदारक घटनामें किसीका भी उत्साह नहीं रह सकता। दूसरी ओर, वैष्णवोंकी परिभाषाको लक्ष्य करनेपर हम देखते हैं कि 'विरह' भी एक उत्सव-विशेष है। 'उत्सव' शब्दका अर्थ है—आनन्द। तो क्या फिर लोगोंके हृदयमें व्यथा

विरह-उत्सवका उद्देश्य—वक्तृता, कीर्त्तन, प्रबन्ध आदिमें कपट विरह-वेदना प्रदर्शित करना नहीं

श्रीश्रीमद्भक्तिप्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज

['श्रीश्रीगुरुपादपद्मकी अप्रकट-तिथि पूजा' नामक प्रबन्धके कु

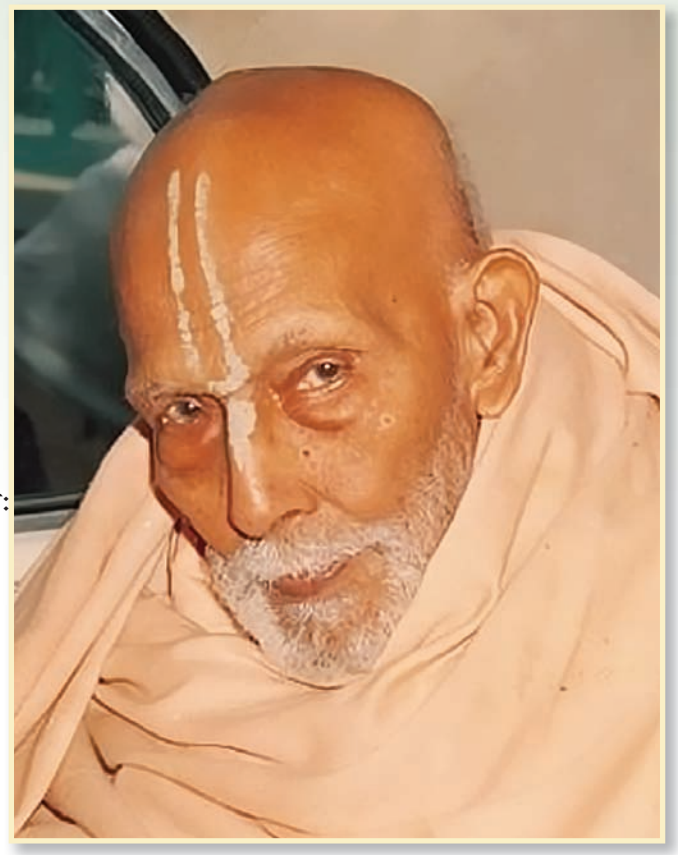

श्रीगुरुदेव—प्राकृत कालसे अतीत

श्रीभगवान् और उनके अभिन्न-प्रकाश-विग्रह श्रीगुरुदेव किसी प्राकृत कालके अधीन तत्त्व नहीं हैं। जड़ीय जन्म-मृत्यु-प्रवाहरूपी काल-शक्ति उनपर अपने किसी भी प्रभावका विस्तार नहीं कर सकती। जिस प्रकार अप्राकृत विषय-विग्रह श्रीभगवान्‌की अप्रपञ्चसे प्रपञ्चमें अवतरण लीलाको 'आविर्भाव' एवं प्रपञ्चसे अन्तर्धान पूर्वक प्रपञ्चातीत गोलोक-वैकु गमनको 'तिरोभाव'-लीला कहा जाता है, उसी प्रकार आश्रय-विग्रह (श्रीगुरुदेव) के इस प्रपञ्चमें आगमन और प्रपञ्च परित्याग पूर्वक नित्यलीलामें प्रवेशको भी क्रमशः प्रकट-अप्रकट अथवा आविर्भाव-तिरोभाव लीला कहा जाता है। वास्तवमें वे नित्य प्रकट वस्तु हैं, उनका कृपापूर्वक इस प्रापञ्चिक जगतके लोगोंके दृष्टिगोचर होना उनकी प्रकटलीला एवं अन्तर्धानलीला प्रकटकर लोगोंके नेत्रोंसे अगोचर होना उनकी अप्रकटलीला है।

अप्राकृत-विरह कृष्ण और कृष्णभक्तके प्रेमसे उत्पन्न

यद्यपि प्रपञ्चागत अभिमानके कारण प्रकट-अप्रकट लीलागत सुख अथवा दुःख अनिवार्य और अपरिहार्य है, तथापि यह अप्रकट दुःख साधारण प्रापञ्चिक दुःखके समान नहीं है, वह तो प्रकट सुखके समान एक ही तात्पर्यसे युक्त है, बल्कि उसमें दो गुणा—तीन गुणा अथवा उससे भी अधिक प्रकट सुखानुभूति विद्यमान रहती है। नित्यप्रकट वस्तुके अप्रकटकी अनुभूति एवं उनके दर्शनके अभाव हेतु जो हा-हुताश अथवा खेदोक्ति होती है, वह प्राकृत-शोकके समान दिखलायी देनेपर भी प्राकृत-शोक और अप्राकृत-विरह कभी भी एक तात्पर्य बोधक नहीं हो सकते। प्राकृत-शोक जड़ीय देह-मनसे सङ्कटित जड़ीय कामनाओंसे उत्पन्न, जड़ीय स्थूल अथवा सूक्ष्म देह और मनकी भोग-वासनाओंमें विघ्न पड़नेसे उत्पन्न होता है तथा अप्राकृत-शोक अथवा विरह नित्य आत्माके साथ संश्लिष्ट अप्राकृत कृष्ण-कार्ष्ण (कृष्णभक्त) के प्रेमसे उत्पन्न होता है।

सेवाके माध्यमसे ही विरहकी अनुभूति

श्रीश्रीमद्भक्तिकमल मधुसूदन गोस्वामी महाराज

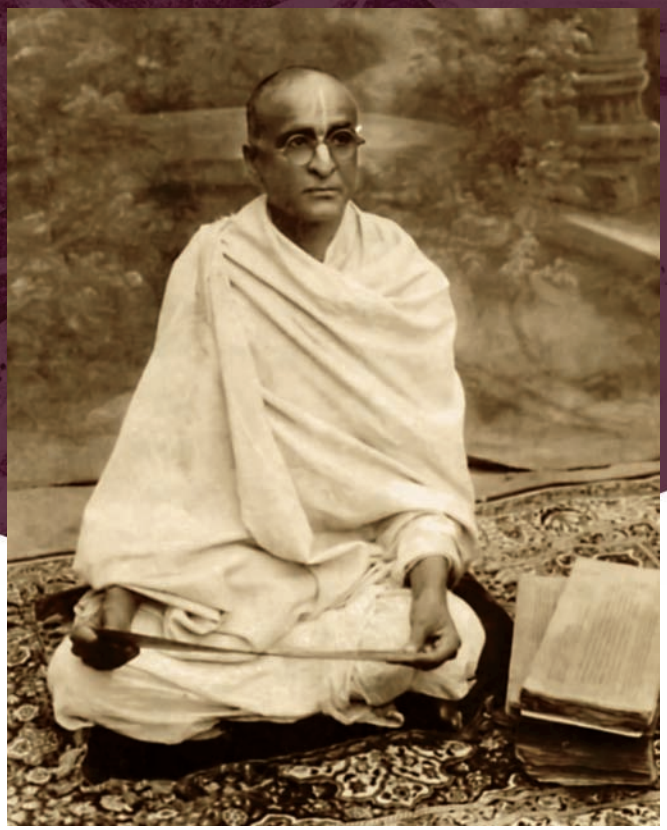

[श्रीश्रील प्रभुपादकी विरह-तिथिके उपलक्ष्यमें लिखित]

बाह्य अनुष्ठान एवं आन्तरिक परिचय

उन्नीस वर्ष[१] पूर्व विप्रलम्भरस-विग्रह श्रीगौरसुन्दरकी करुणाशक्तिके मूर्तिमान, जीवमात्रके परमबन्धु ॐ विष्णुपाद परमहंस श्रीश्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपादने अप्रकट-लीलाका आविष्कार किया था। सारस्वत गौड़ीय वैष्णवोंने गत १६ पौष तिथिको श्रील प्रभुपादकी तिरोभाव तिथि-पूजा अपने-अपने अधिकारके अनुसार यथारीति सम्पादित की है। श्रील प्रभुपादके आश्रित हम सभी प्रतिवर्ष इस परम-पवित्र सर्वश्रेष्ठ तिथिकी यथारीतिसे आराधना करते आ रहे हैं। किन्तु वास्तविक रूपमें हममेंसे कितने लोगोंके हृदयमें उनकी विरह-व्यथा किञ्चित परिमाणमें भी रेखापात करनेमें समर्थ हुई है, यह एकमात्र श्रील प्रभुपाद ही जानते हैं। हमारे आनुष्ठानिक कार्योंमें कोई त्रुटि-विच्युति नहीं है, किन्तु आन्तरिक परिचयमें हमारा स्थान कहाँ है, इसका निर्णय कौन करेगा? बाह्य दर्शनसे प्रताड़ित मेरे जैसे सम्बन्ध-ज्ञान-हीन, कनक-कामिनी एवं प्रतिष्ठा-लोलुप, वागाड़म्बर-सर्वस्व अर्थात् वाणीकी आडम्बरताको ही सब कु व्यक्तिके लिये प्रभुपादके प्रति विरह कहाँ है?

विरह ही भजन-राज्यमें विपुल उद्दीपना प्रदानकारी

सम्बन्ध-ज्ञानके बिना विरहका प्रश्न ही उदित नहीं हो सकता। हमारी इतनी अयोग्यता रहनेपर भी अत्यधिक आशाका एक कारण है और वह है—पतित जीवोंके लिये पतित-पावन श्रील प्रभुपादकी अभूतपूर्व

[१] वर्ष १९५६ में लिखित प्रबन्ध

श्रीगुरुपादपद्मके अप्रकट होनेपर दसों दिशाएँ अन्धकारमय

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज

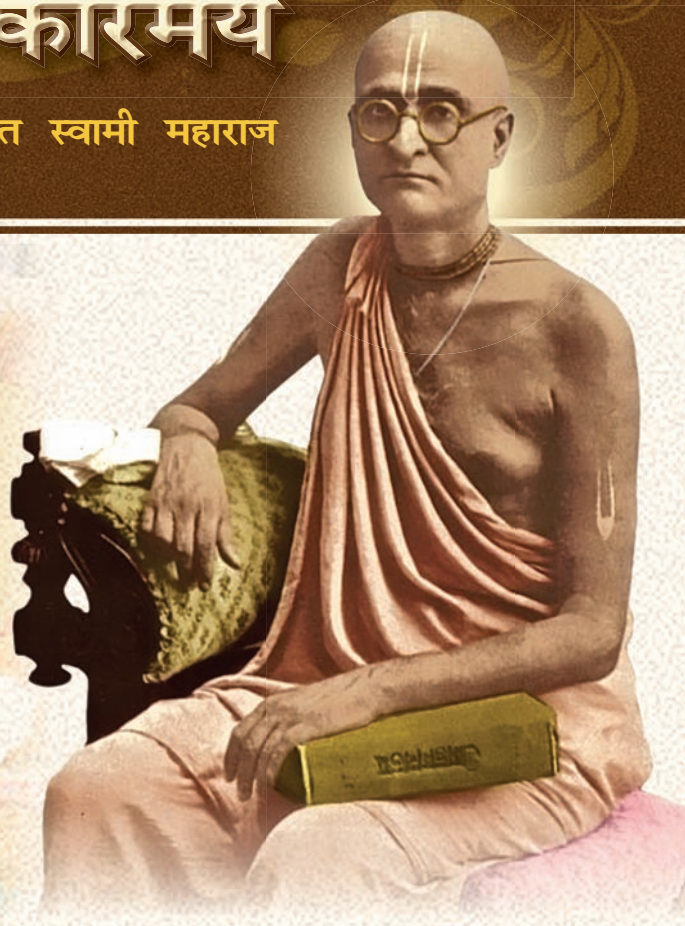

[ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर लिखित 'विरह-अष्ट-अष्टक' नामक पद्य]

प्रथम-अष्टक

जीवेर दरद-दुःखी श्रील प्रभुपाद।
विरह-वासरे तव हेरि अवसाद॥ १॥
आबद्ध करुणा-सिन्धु काटिया मोहान।
नित्यानन्द करेछिल प्रेमवन्या दान॥ २॥
यादेर कवले छिल स्रोत प्रवाहित।
तादेर बाधिल माया व्रत परहित॥ ३॥
जाति-गोसाई नामे तारा प्रवाह बाधिल।
आपनि आसिया प्रभु मुहाना खुलिल॥ ४॥
प्रेमेर वन्याय आबार डुबाल सबारे।
मो-हेन दीन हीन पतित पामरे॥ ५॥
महाप्रभुर आज्ञा-बले सेवक सबारे।
गुरुरूपे पाठाले जीवेर द्वारे द्वारे॥ ६॥
आसमुद्र हिमाचल सर्वत्र प्रचार।
तोमार विरहे आज सब अन्धकार॥ ७॥
जीवेर दरद-दुःखी श्रील प्रभुपाद।
विरह-वासरे तव हेरि अवसाद॥ ८॥

कीर्तनीयः सदा हरिः

हे श्रील प्रभुपाद! यदि इस समय आप पुनः आ जायें, एक बार फिर उसी प्रकार हरि-कीर्तनक गान करें और पुनः यदि दसों दिशाओंमें आपकी वाणीका प्रचार हो, तो समस्त लोक आनन्दसे उच्छलित हो जाएँ॥ ४-५॥

गौरवाणीकी विजय पताका लहरानेवाली आपकी गम्भीर हुँकारसे सब पाषण्डी व्यक्ति भाग जाते और जीवका हृदय अमृतमय चैतन्य-कथासे परिपूर्ण हो जाता॥ ६॥

आपके आगमनसे समस्त जगत्में पुनः सभीका आपकी परमसत्य वाणीकी ही ओर ध्यान-केन्द्रित हो जाता, किन्तु आपके बिना आज सब ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, मानो उन्हें किसी अमूल्य मणिकी प्राप्ति हुई थी और आज वे उसे खो बैठे हैं॥ ७॥

हे प्रभु! आपके विरहमें आज हृदय विदीर्ण हो रहा है और उसी विरह-वेदनाको अभय[१] (नामक जन) किञ्चित प्रकाशित कर रहा है। जीवोंके दुःखमें दुःखी हे श्रील प्रभुपाद! आपकी विरह-तिथिमें सबकु

(श्रीगौड़ीय पत्रिका वर्ष—१०, संख्या—११ से अनुवादित)

[१] श्रीश्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त स्वामी महाराजको दीक्षाके समय प्रदत्त श्रीअभयचरणारविन्द दास नामका सूचक।

विरहोत्सव

[श्रील भक्तिविनोद ठाकु
(३/७/१९३२) के उपलक्ष्यमें साप्ताहिक
'गौड़ीय' में प्रकाशित प्रबन्धके कु

गौर-परिकरोंका विरह गौर-प्रदर्शित भजनका ही उद्दीपन

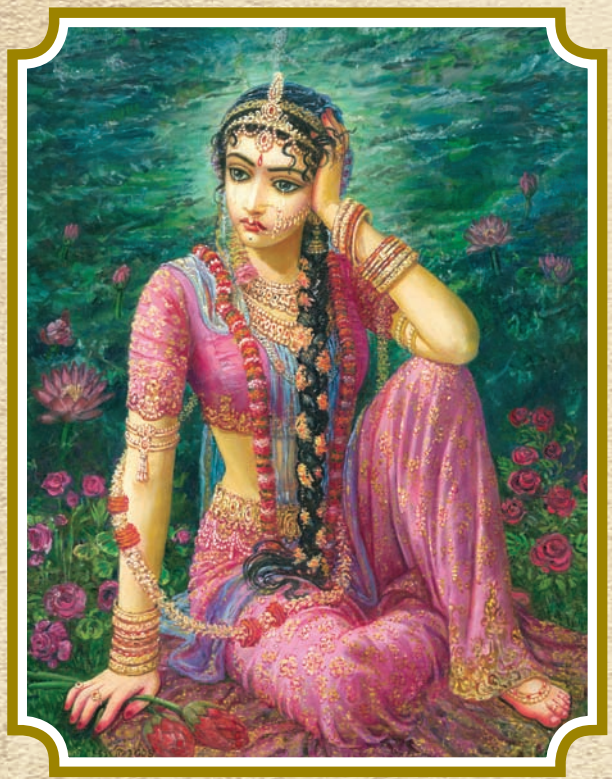

श्रीचैतन्यदेवकी भजनरीति ही विरहोत्सव है। श्रीचैतन्यदेवके परिकरोंकी शिक्षा, दीक्षा, आचार, प्रचार सभी कु
श्रीचैतन्यदेवकी शिक्षा-प्रणालीमें कहीं भी नहीं है। श्रीचैतन्यदेव स्वयं विरहोत्सवकी सान्द्र (घनीभूत) मूर्त्तिके लीलामय विग्रह हैं। श्रीवृषभानुनन्दिनी विरहोत्सवकी पराकाष्ठाकी प्रतिमूर्त्ति हैं—इस विरहोत्सवको रूप देनेके लिये ही गौरावतार हुआ है। अतएव गौरपरिकरोंका विरह गौर-प्रदर्शित भजनका ही उद्दीपन है।

गौरशक्ति—श्रीगदाधर प्रभु (पण्डित) और श्रील भक्तिविनोद प्रभुने एक ही तिथिमें अप्रकट-लीला प्रकाशित करके आषाढ़ मासकी अमावस्या तिथिको उत्सवका रूप प्रदान किया है। विप्रलम्भ-विग्रह श्रीगौरसुन्दरकी इन दोनों शक्तियोंने अपनी भुवनमङ्गलमयी प्रकटलीलाके आविष्कारमें विरहोत्सवमय चरित्र एवं अप्रकटलीलाके विस्तारमें भी जगतको विरहोत्सवमय करनेका आदर्श प्रदर्शित किया है।

विरह-व्यथित व्यक्तिकी चित्तवृत्ति

श्रीपाद अनादिकृष्ण भक्तिशास्त्री

[प्रभुपाद श्रीश्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकु
उन्नीसवीं विरह तिथिपूजाके उपलक्ष्यमें लिखित]

विरहकी अनुभूति ही भजनका मूलमन्त्र

आज परमाराध्यतम श्रीश्रील प्रभुपादकी विरह-तिथि है। सेव्यके विरह अथवा विप्रलम्भकी अनुभूति ही गौड़ीय-वैष्णवोंके भजनका मूलमन्त्र अथवा सर्वश्रेष्ठ सम्पद है। जो इस सम्पत्तिके अधिकारको प्राप्त कर पाये हैं, वे धन्यातिधन्य हैं।

सेव्यवस्तु अथवा इष्टदेवके प्रति अत्यधिक आसक्ति, अकृत्रिम प्रेम और ऐकान्तिक प्रीतिके उदित होनेपर, उस सेव्य वस्तुका सेवा-सान्निध्य प्राप्त करनेके लिए जब सेवकमें निरन्तर व्याकु
चेष्टा देखी जाती है; तब उस सेवकके हृदयमें प्रत्येक क्षण ही अविछिन्न तैलधारावत सेव्यवस्तुकी सुखरूपी अनुसन्धानमयी चेष्टा वर्तमान रहती है, जो पुनः कभी भी शिथिलता प्राप्त नहीं करती। उस समय साधकके हृदयमें—**'क्षान्तिरव्यर्थकालत्वं विरक्तिर्मानशून्यता। आशाबन्धः समुत्कण्ठा नामगाने सदा रुचिः॥ आसक्तिस्तद्गुणाख्याने प्रीतिस्तद्वसतिस्थले।'**

भगवान् एवं गुरुपादपद्मके विरहमें जीवन धारण करनेका वास्तविक उद्देश्य

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

[श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीकी विरह-तिथि, २३/१०/१९९१ को, श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ, नवद्वीपमें प्रदत्त वक्तृताके कुछ अंश]

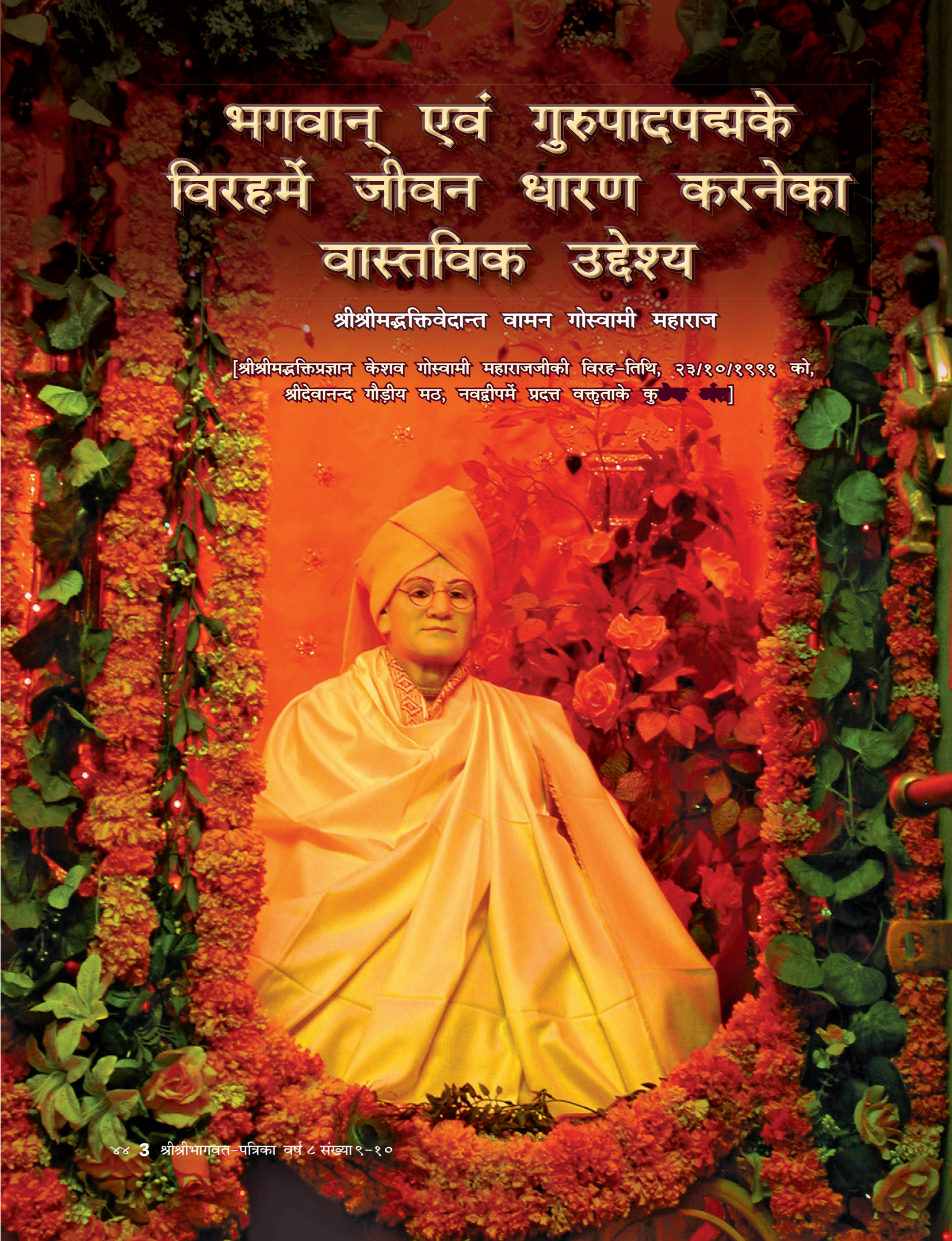

करुणामय श्रील प्रभुपाद

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त त्रिविक्रम गोस्वामी महाराज

[श्रीश्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकु
वर्ष १९५६ में लिखित प्रबन्ध]

हे परमाराध्य करुणामय प्रभुपाद,

आज आपकी शुभ अप्रकट तिथि है। चारों दिशाओंमें आपका जयगान हो रहा है। जो लोग आपका जयगान कर रहे हैं, वे धन्य हैं। आपने उन सभीपर कृपा की है। जो लोग जयगान नहीं कर रहे हैं, उन सभीके ऊपर आपकी व्यतिरेक **(Indirect)**-कृपा वर्षित हो रही है। आप कृपामय हैं; अतः कृपाके अतिरिक्त और कोई भी वस्तु आपसे क्षरित नहीं होती, किन्तु अपने-अपने भाग्यके कारण सभी उस कृपाको समान रूपसे ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं। इसमें आपका कोई पक्षपात नहीं है। **'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्** अर्थात् जो मनुष्य जिस प्रकार मुझे भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ।' (श्रीगी॰ ४/११)—वचनका सदाचार आपके द्वारा यथार्थ रूपसे ही रक्षित हो रहा है। **'समोऽहं सर्वभूतेषु** अर्थात् मैं सभी भूतोंमें सम अर्थात् समदर्शी हूँ' (श्रीगी॰ ९/२९) वाक्यकी सत्यताकी रक्षा करनेवाले आपके आदर्शमें देखा जाता है कि तथाकथित आपके निकटमें रहनेका विशेष अभिमान करनेवाले व्यक्तिको भी आप समुचित दण्ड देनेमें कु

आपके द्वारा दिया गया वही दण्ड ही आपकी करुणा है—यही आपके करुणामय होनेका परिचय है।

गौड़ीय-दर्शनमें विरह

श्रीमद्भक्तिसर्वस्व गोविन्द महाराज

[श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीकी प्रथम विरह-तिथिके उपलक्ष्यमें लिखित पुष्पाञ्जलि]

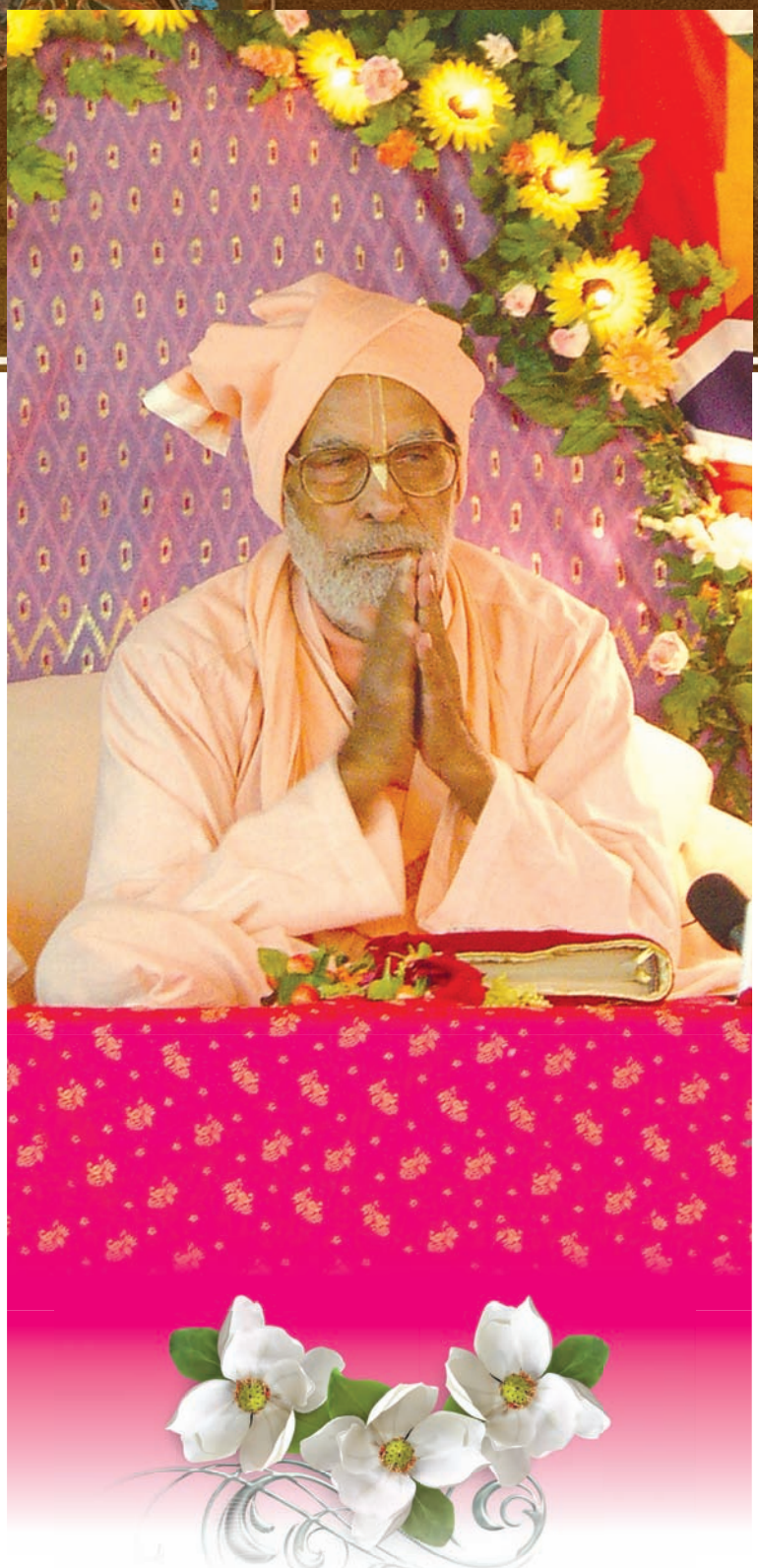

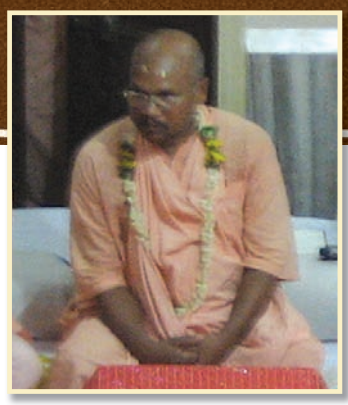

विरह-वेदनामें आतुरता ही गौड़ीय-भजन

विरह-वियोग विच्छेद वाचक है। आत्मीय व्यक्तियोंके वियोगमें ही विरह-दशा उदित होती है। आत्मीयता जितनी घनिष्ठ होती है, विरह भी उतना ही अधिक गाढ़ होता है। विरहमें दस दशाएँ उदित होती हैं। चिन्ता, जागरण, उद्वेग, तानव, मलिनता, व्याधि, प्रलाप, उन्माद, मोह और मृत्युके भेदसे दशाएँ दस प्रकारकी हैं। परन्तु आत्मीयताके अभावमें विरह-दशाका भी अभाव परिदृष्ट होता है। दैहिक अथवा गोत्र आदिका सम्बन्ध रहनेपर भी केवल ममतास्पद वस्तु और व्यक्ति विशेषके विच्छेदमें ही विरह-दशा उदित होती है। गौड़ीय-दर्शनमें विरह एक विशेष गुरुत्वपूर्ण भूमिकामें अवस्थान करता है। विशेषतः विरह-वेदनामें आतुरता ही गौड़ीय-भजन है। प्राकृत जगतमें अपस्वार्थपर जीवोंके बीच जो विरह-विचार देखा जाता है, वह प्राकृत-विरह होता है, पारमार्थिक विरह नहीं। प्राकृत-विरह शुद्रताका जनक है, परन्तु अप्राकृत-विरह पारमार्थिक होता है। कारण पार्थिव देह-दैहिक विषयोंके लिये होनेवाले शोकसे चित्तकी विमूढ़तावशतः क्रमशः भगवद्भजनमें उदासीनता आती

FOUNDER
SOCIET
PARI

आश्रितजनों द्वारा प्रदत्त पुष्पाञ्जलि–१

श्रील सरस्वती ठाकुर प्रभुपादके अभीष्टपूरक रसाचार्य

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके अप्रकट होनेके उपरान्त लिखित]

श्रीपाद भक्तिवेदान्त पद्मनाभ महाराज

अहो! हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि इस कलियुगमें गौर अवतार श्रीचैतन्य महाप्रभुके आविर्भावके मात्र पाँच- सौ वर्षके उपरान्त हमनें जन्म लिया है। स्वयं-भगवान् श्रीकृष्ण श्रीगौर रूपमें परमोच्च अप्राकृत-लोक श्रीगोलोक वृन्दावनसे अपने परमकरुणामय रूपमें आविर्भूत हुए। वह उस सर्वोच्च अप्राकृत प्रेमको प्रदान करनेके लिए आये, जिसे चिर कालसे प्रदान नहीं किया गया था। सौभाग्यवान जीवोंको अति दुर्लभ उन्नतोज्ज्वल-प्रेम प्रदान करनेके उद्देश्यसे उन्होंने अपने अन्तरङ्ग नित्य परिकरोंको इस जगत्में अवतरित कराया जिनके हृदयमें वह उन्नतोज्जवल प्रेम विराजमान है। अपने उन परिकरोंके सङ्गके प्रभावसे श्रीमन्महाप्रभुने अप्राकृत-प्रेमकी बाढ़से सम्पूर्ण जगत्को आप्लावित कर दिया।

वृषभानुनन्दिनी श्रीराधाजीकी अत्यन्त प्रिय किङ्करी

श्रीचैतन्य महाप्रभुके अन्तर्धानके उपरान्त भी सम्पूर्ण विश्वमें उनकी वाणीका प्रचार करनेके उद्देश्यसे उनके अनेकानेक नित्य-परिकर आचार्य रूपमें इस जगत्में अवतीर्ण हुए हैं। वर्तमान कालमें कलियुग पावनावतारी श्रीगौराङ्गदेवके ऐसे ही एक नित्य-परिकर श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज इस जगत्में आविर्भूत हुए। उनका आन्तरिक परिचय वृषभानुनन्दिनी श्रीमती राधा ठाकु
अत्यन्त प्रिय किङ्करी है, जो श्रीरूप मञ्जरीके आनुगत्यमें श्रीराधाजीकी सेवा करती हैं। उनके इस जगत्में आनेका एकमात्र कारण श्रीमती राधाजीके चरणकमलोंकी अमृतमयी सेवाका प्रचार करना तथा परम सौभाग्यशाली जीवोंको श्रीमती राधाजीके उन नित्य-आनन्दमय कु
जो कु

श्रीमती राधाजीके दास्यकी वासना जागृत करनेवाले

हे श्रील गुरुदेव! आप व्रज-प्रेममें निमग्न सर्वोच्च परमहंस संन्यासीके रूपमें हमारे समक्ष उपस्थित हुए। आपने अपने जीवनके प्रत्येक महूर्त्तमें श्रीमती राधिकाकी आराधना की है एवं जो भी आपके सान्निध्य या सम्पर्कमें आता, आप उसके हृदयमें भी श्रीमती राधाजीके दास्यकी वासना जागृत करनेका प्रयास करते। आपके जीवनका प्रत्येक क्षण जीवोंको श्रीमती राधाजीके चरणकमलोंकी सेवामें नियुक्त करनेके लिए समर्पित था।

रूपानुग-सिद्धान्तोंकी महान्-निधिके प्रस्तुतकर्त्ता

श्रील गुरुदेव! आप परमहंस रूपानुग-आचार्य हैं। अपने गुरुदेव श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज एवं शिक्षा-गुरु श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त स्वामी महाराजके सर्वोत्तम सेवक होनेके कारण आपने श्रीश्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकु
संरक्षण करते हुए समस्त विश्वमें श्रीरूप-रघुनाथकी वाणीका निर्भीकतापूर्वक ऐसा प्रचार किया, जैसा कि आधुनिक कालमें किसी भी आचार्यने नहीं किया। पर्वतोंके शिखरोंपर, विशाल महासागरोंके मध्य स्थित छोटे द्वीपोंमें, विश्वके सभी प्रधान महानगरोंमें तथा

श्रील महाराजकी अविस्मरणीय स्मृतियाँ

श्रीपाद भक्तिवेदान्त परिव्राजक महाराज

[नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीकी अप्रकट-लीलाके उपरान्त विरह-सभा, १/१/२०११, को श्रीश्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, नवद्वीपमें प्रदत्त वक्तृता एवं उन्हींकी प्रथम विरह-तिथिके उपलक्ष्यमें लिखित पुष्पाञ्जलिके कतिपय अंश]

विरह प्रसूनाञ्जलि

श्रीपाद भक्तिवेदान्त तीर्थ महाराज

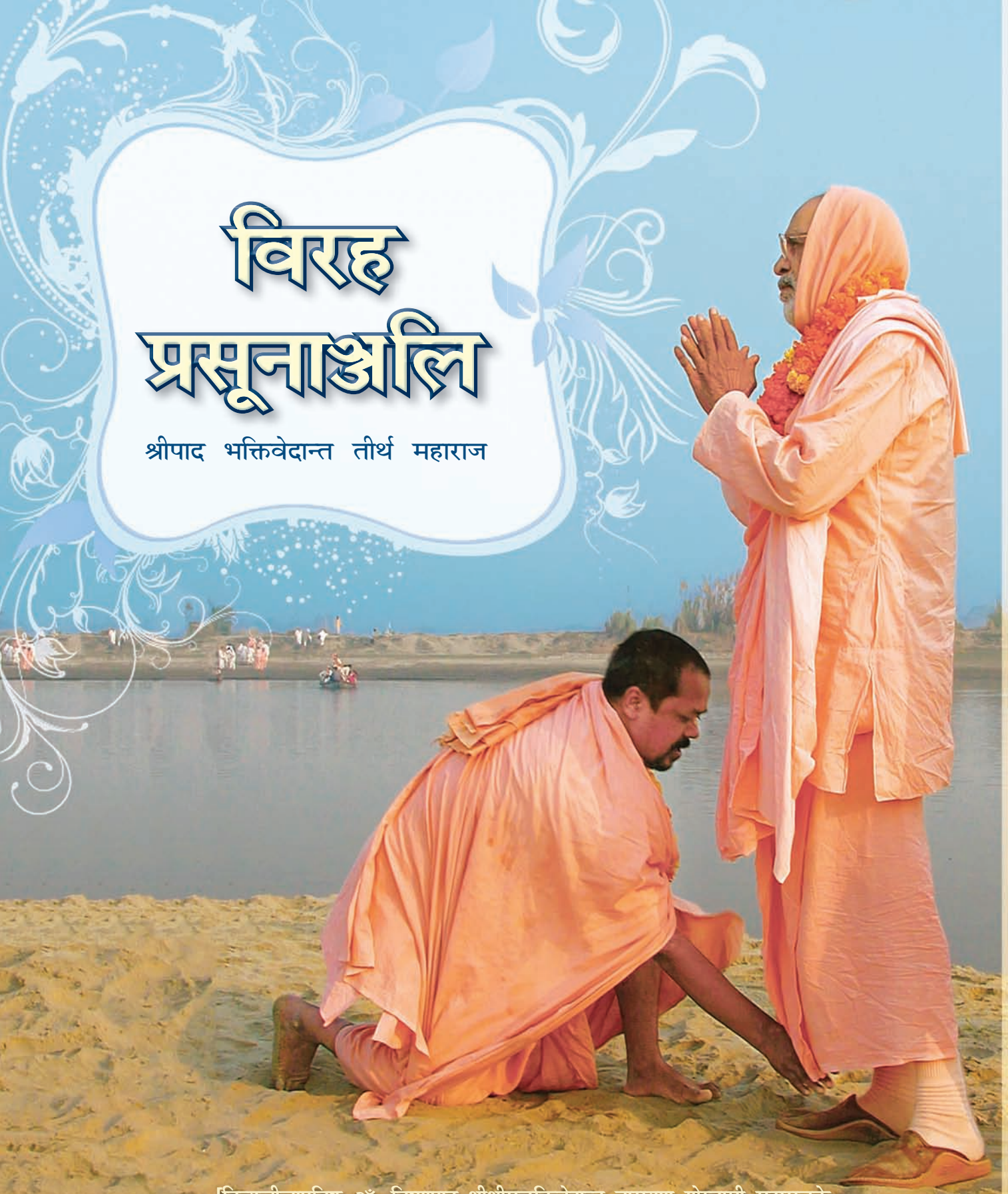

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके अप्रकट-लीलाके उपरान्त एवं प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित पुष्पाञ्जलियोंके कतिपय अंश]

अप्राकृत गुणोंके कतिपय स्मरण द्वारा श्रीचरणकमलोंमें विरह-पुष्पाञ्जलि

श्रीपाद भक्तिवेदान्त माधव महाराज

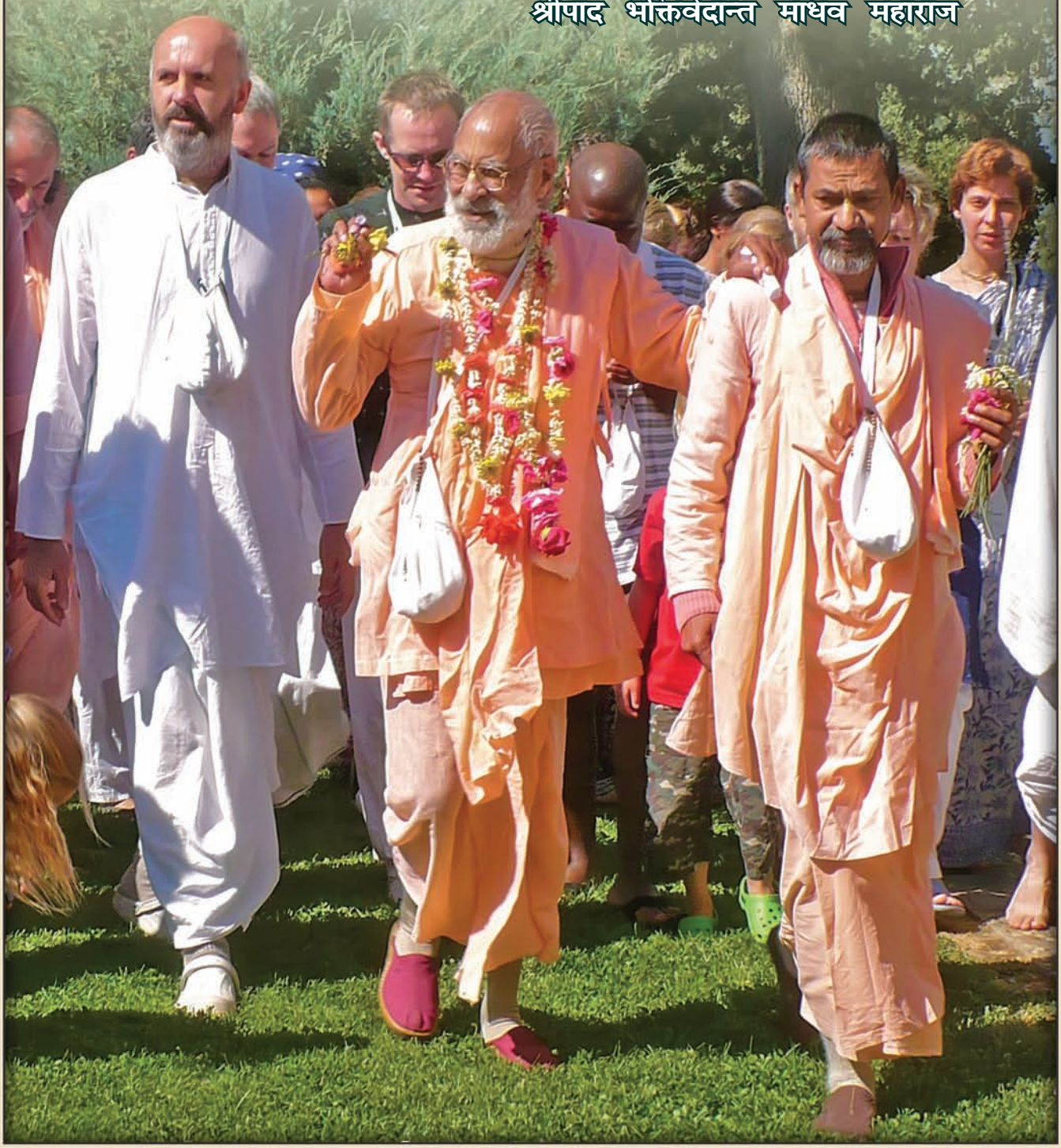

विरह-विलाप

श्रीपाद भक्तिवेदान्त वन महाराज

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके
प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

हृदयमें श्रीमन्महाप्रभुका आसन प्रकटित करनेवाले

श्रीश्रीराधाभावसुवलित श्रीगौरसुन्दर एवं उनके निजपरिकर समस्त गोस्वामीगण ही श्रीहरिनाम-सङ्कीर्त्तनके मूल प्रवर्त्तक हैं। उसी श्रीहरिनाम-सङ्कीर्तनकी परम्पराको अग्रसर करनेवाली श्रीरूपानुगा-गौड़ीय-परम्परामें नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीकी भूमिका विशेष उल्लेखनीय है। श्रील महाराजजीने समस्त विश्वको नाम-सङ्कीर्त्तन एवं प्रेमधर्मके द्वारा आप्लावित किया है। समस्त जीवोंके हृदयमें श्रीकृष्णचैतन्य

श्रील महाराजजीके प्रथम विरह-वासरके उपलक्ष्यमें भक्ति-प्रसूताञ्जलि

श्रीपाद भक्तिवेदान्त पुरी महाराज

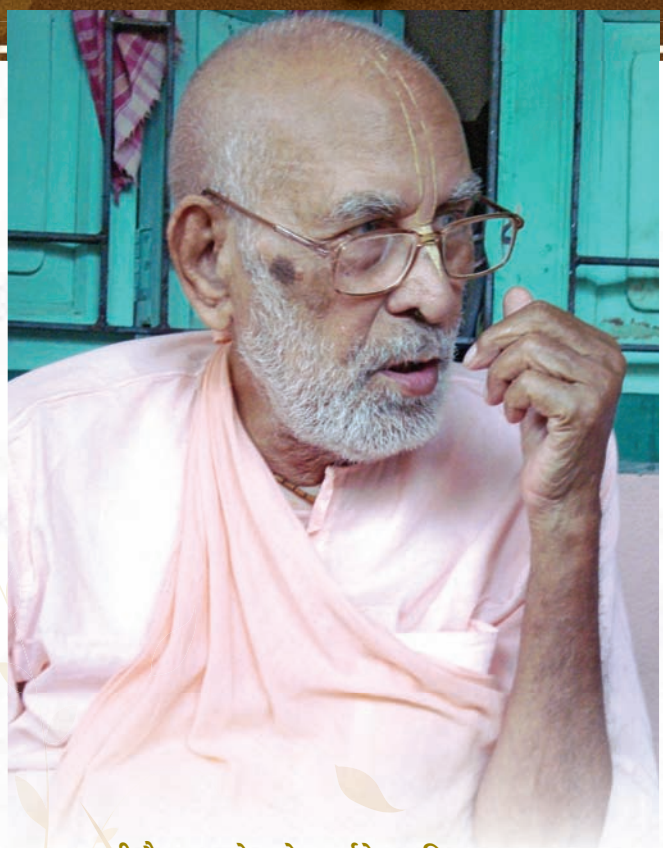

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

श्रीगौरसुन्दरके प्रेमधर्मके प्रति आकृष्ट

एकसमय वर्ष १९४६ ई. में बिहारमें नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीके द्वारा प्रतिष्ठित श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके विशिष्ट-प्रचारक परम पूज्यपाद श्रीनरोत्तमानन्द प्रभु (श्रीश्रीमद्भक्तिकमल मधुसूदन गोस्वामी महाराजजी) के श्रीमुख निःसृत हरिकथाको श्रवणकर मेरे शिक्षागुरु श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजी जो उस समय सरकारी पुलिस विभागमें कार्यरत थे, अत्यन्त मुग्ध हो गये थे। उसी समयसे श्रील महाराजजी श्रीगौरसुन्दरके आचरित-प्रचारित विमल प्रेमधर्मके प्रति आकृष्ट हो गये एवं तभी उन्होंने यह अनुभव किया कि मनुष्य जीवनको प्राप्तकर संसार धर्मका निर्वाह करना पुरुषार्थका कार्य नहीं है, बल्कि हरिभजनके द्वारा कृष्णप्रेम प्राप्त करनेमें ही मनुष्य जीवनकी चरम सार्थकता और परम कर्त्तव्य है। तदनन्तर श्रील महाराजजीने—**'यद् अहरेव विरजेत्, तद् अहरेव प्रव्रजेत्** अर्थात् जिस दिन विषयोंसे विरक्ति उत्पन्न होती है, उसी दिन विषयोंको त्यागकर संन्यास ले लेना चाहिए' (जाबालोपनिषत् ४)—शास्त्रोंकी इस वाणीको स्मरणकर १९४६ ई॰ में प्रायः पच्चीस वर्षकी अवस्थामें उच्च-पदस्थ पुलिस विभागकी नौकरीको तुच्छज्ञानकर स्वेच्छासे पदत्याग कर परमगुरुदेव श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीके श्रीचरणोंमें आत्मसमर्पण किया।

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजका अपूर्व वैशिष्ट्य

श्रीपाद भक्तिवेदान्त श्रीधर महाराज

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके अप्रकट होनेके कु

श्रद्धा-अर्घ्य

श्रीपाद भक्तिवेदान्त गोविन्द महाराज

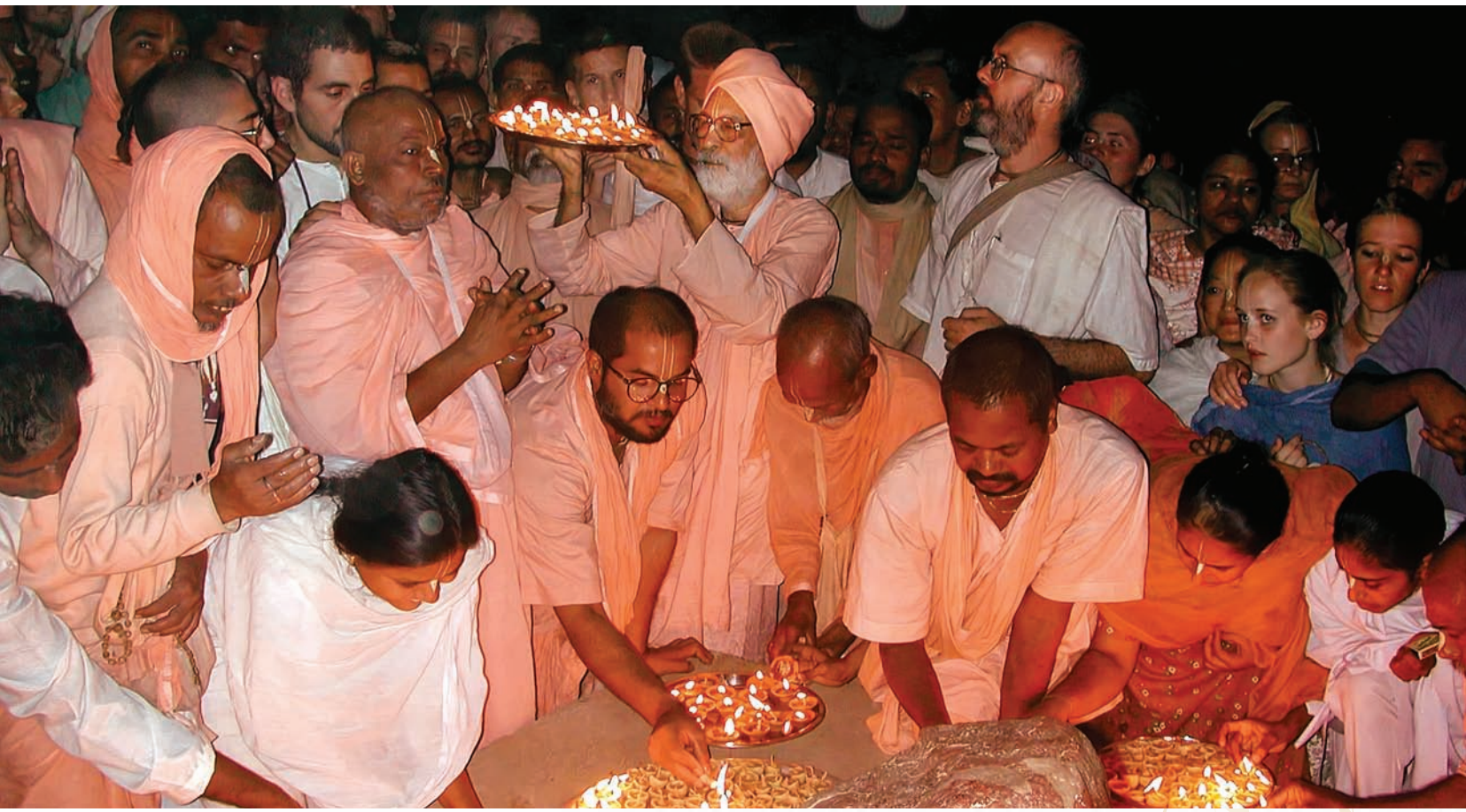

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

अपनी अयोग्यताका ज्ञापन

आज मेरे शिक्षागुरुपादपद्म नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम वर्षपूर्त्ति विरह-महोत्सवका पालन हो रहा है। उनके आश्रित सभी भक्तगण अपनी-अपनी योग्यतानुसार सेवा करके स्वयंको धन्यातिधन्य मान रहे हैं। किन्तु मैं एक दुर्भागा जीव हूँ। किसी प्रकारकी योग्यता नहीं होनेके कारण दूरसे ही सभी गुरुसेवकोंके सेवा-सौन्दर्यका सन्दर्शनकर मेरे मनमें भी कु करनेकी लालसा जागृत हो रही है, किन्तु साथ ही यह सोचकर भय भी होता रहा है कि सेवा करनेकी कपटता करनेपर किसी प्रकारकी धृष्टता न हो जाये। इसलिए सबके अगोचर रहकर केवल अश्रुसिक्त नेत्रोंसे श्रील महाराजजीके कृपाभिषिक्त भक्तोंसे सेवा-शिक्षा प्राप्त करनेका प्रयास कर रहा हूँ।

विरहमें श्रील महाराजजीका स्मरण

श्रीपाद भक्तिवेदान्त मधुसूदन महाराज

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

विरहेण सदा याचे तव पादपद्ममेषु मे।
आश्रय चरणे देहि गुरुदेव कृपामयम्॥

अर्थात्, हे कृपामय गुरुदेव! तीव्र विरहसे युक्त होकर मैं आपके श्रीचरणोंमें यही याचना करता हूँ कि आप मुझे अपने श्रीचरणकमलोंमें सदा आश्रय प्रदान करें।

विरह-वेदना—अन्यान्य समस्त प्रकारकी वेदनाओंको तुच्छ कर देनेवाली

श्रीकृष्ण-भक्तके विरहके समान इस जगत्में और कोई भी दुःख नहीं है, फिर इससे बढ़कर कोई दुःख होगा, ऐसा प्रश्न ही नहीं उठता। अतः भक्त-विरहकी वेदनाकी तुलना किससे की जाय? कालकूट विष, तलवारकी धार, दहकता अंगार आदि की वेदनाएँ भी जहाँपर तुच्छ हो जाती हैं, ऐसी होती है भक्त-विरहकी वेदना। श्रील नरोत्तमदास ठाकु
भी कु

पाषाणे कु
गौराङ्ग गुणेर निधि कोथा गेले पाबो॥

अर्थात् श्रीगौरसुन्दरके गुणोंकी निधि स्वरूप श्रीनिवासाचार्य प्रभुको मैं अब कहाँ जाकर पाऊँ? उनके अदर्शनकी जो वेदना है, वह असहनीय है, मैं अब क्या करूँ? मैं अपना मस्तक पत्थरपर फोड़ूँ अथवा अग्निमें प्रवेश कर जाऊँ, मुझे यह समझमें नहीं आता है कि इस वेदनाकी परिसमाप्ति कैसे होगी?

उक्त कथन परम सत्य ही है, क्योंकि जिन्होंने साक्षात्रूपसे श्रील गुरुदेवकी सेवादिका सौभाग्य प्राप्त किया है, वे उन समस्त स्मृतियोंको कैसे विस्मृत कर पाएँगे?

श्रील गुरुदेवका स्मरण

श्रीपाद भक्तिवेदान्त विष्णुदैवत महाराज

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

आत्मविश्वासको वर्धित करनेवाले

मुझे सर्वप्रथम श्रील गुरुदेवके विषयमें १९९८ ई. में कुछ श्रवण करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन्टरनेटपर मैं प्रायः ही श्रील गुरुदेवके विश्वव्यापी प्रचारकी रिपोर्ट तथा भक्तों द्वारा लिपिबद्ध की हुई उनकी हरिकथाको पढ़ता था। उनकी हरिकथाको पढ़नेसे मेरा आत्मविश्वास बढ़ता था। मैं न्यूयॉर्क जैसे महानगरमें मायाके जालमें आबद्ध था। Wall Street में काम करता था। मेरे आसपासमें प्रचुर-धन तथा भौतिक चकाचौंध थी, परन्तु ऐसे गुरुदेवका अभाव था जो मुझे भगवानकी ओर ले जायें। श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी महाराजजीके ग्रन्थ पढ़नेसे मुझे एक सद्गुरूके लक्षणोंसे थोड़ा बहुत परिचय तो प्राप्त हुआ था, परन्तु उन लक्षणोंसे युक्त किसी वैष्णवका दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था।

गहन तथा सर्वोच्च विषयोंके प्रकाशक

वर्ष २००२ ई. में श्रील गुरुदेवके आनुगत्यमें न्यूयॉर्क राज्यके अन्तर्गत "लेक वॉशिंग्टन" नामक एक स्थानपर हरिभक्ति प्रचार-प्रसार हेतु विशाल हरिकथा-उत्सवका आयोजन किया गया। वहाँ श्रील गुरुदेवके साथ अनेकानेक संन्यासी तथा ब्रह्मचारी प्रचारक भी थे। श्रील गुरुदेवने 'श्रीरायरामानन्द संवाद' पर स्वयं प्रवचन दिया तथा अपने प्रचारकोंके

श्रील गुरुदेव श्रीरूपानुगा-गुरुपरम्पराकी धरोहर

श्रीपाद भक्तिवेदान्त सिद्धान्ती महाराज

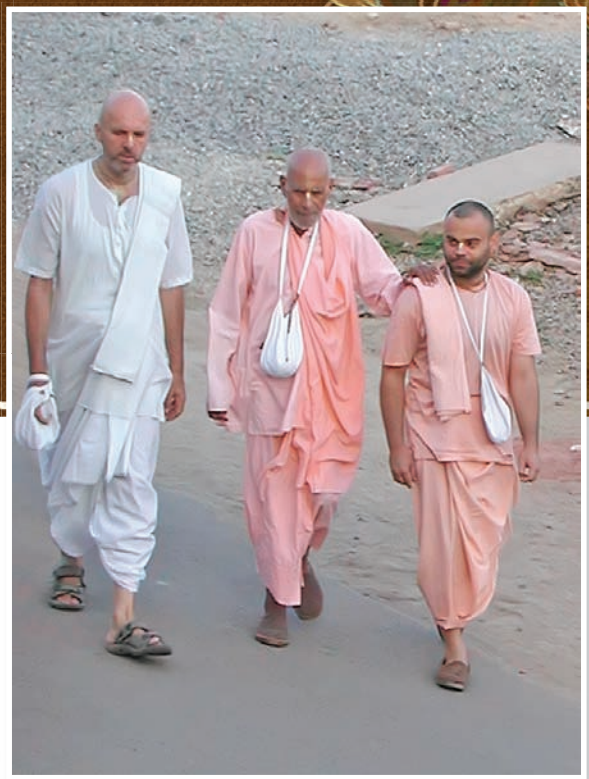

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके अप्रकट होनेके कु दिन उपरान्त लिखित]

सत् गौड़ीय-सम्प्रदायके गौरवकी रक्षा करनेका गुरुदायित्व वहन करनेवाले

जिस समय गौड़ीय-वैष्णव-समाजके अन्तर्भुक्त अधिकांश भक्त अपने गौड़ीय-गौरव, आत्म-मर्यादा तथा सत्-सिद्धान्तोंके सारको भूलकर असत्-मनोवृत्तिके द्वारा परिचालित होकर अपने आचरणके द्वारा अगौड़ीयके रूपमें परिदृश्यमान् हो रहे थे, जिस समय ऐसे व्यक्ति गौड़ीय-गौरवको समझनेमें असमर्थ होनेके कारण सद्गतिके स्थानपर दुर्गतिको प्राप्त कर रहे थे, मुखसे स्वयंको श्रीरूपानुग कहनेपर भी जब ऐसे लोग श्रीचैतन्यमहाप्रभुके मनोभीष्ट संस्थापक श्रील रूप गोस्वामीके विचारोंका दूर-दूर तक स्पर्श भी नहीं कर पा रहे थे, श्रील रघुनाथदास गोस्वामी, श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी, श्रील नरोत्तमदास ठाकु चक्रवर्त्ती ठाकु गौरकिशोर दास बाबाजी महाराजके पूर्ण कृपापात्र, श्रीरूपानुगा-विचारधाराके विरुद्ध अपसिद्धान्तोंको ध्वंस करनेवाले जगद्गुरु श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकु उपदेशोंका यथार्थ समाञ्जस्य करनेमें असमर्थ हो रहे थे, जिस समय वे तथाकथित भक्त गौड़ीय-परम्परामें आनेवाले किसी एक प्रमाणिक गुरुके शिष्य होनेका अभिमानकर अन्यान्य विशुद्ध गुरु-वैष्णव-आचार्योंका सम्पूर्ण रूपसे अनादर करके नरकमें जानेका मार्ग प्रशस्त कर रहे थे, अपने ही गुरुके उपदेशों और उनके विचारोंका ठीकसे समाञ्जस्य नहीं कर पा रहे थे, अनेकानेक अयोग्य अनाधिकारी व्यक्तियोंमें बलपूर्वक गुरुके पवित्र आसनपर बैठनेकी होड़ लग रही थी तथा जब वैसे तथाकथित गुरु अपनी इन्द्रियतृप्तिके लिये कोमल श्रद्धावान् भक्तोंकी भावनाओंसे खिलवाड़ कर रहे थे, उस समय अपने परमाराध्यदेवका इङ्गित और निर्देश प्राप्त करके उपरोक्त तथा इसके अतिरिक्त अन्यान्य अनेक भ्रान्तियोंके घने कोहरेसे गौड़ीय-गगनको निर्मुक्त करनेके उद्देश्यसे लगभग १९९६ ई. में परमाराध्य मदीय शिक्षा गुरुदेव श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजने सत् गौडीय-सम्प्रदायके गौरवकी रक्षा करनेका गुरुदायित्व अपने कन्धोंपर लेकर विपुल रूपसे प्रचार कार्य प्रारम्भ किया था।

गौड़ीय-वैष्णव-समाजमें युगान्तर उपस्थित करानेवाले

श्रील गुरुदेवने अपने स्वास्थ्य और वृद्धावस्था, सम्प्रदाय-विरोधी अपसिद्धान्तवादियों, इस्कॉन, अनेकानेक श्रीगौड़ीय मठों, यहाँतक कि अपनी ही गौड़ीय वेदान्त समितिके लोगों तथा कु प्रचुर विरोध, कटु-उक्तियों, लाञ्छनों अथवा गञ्जनाओंसे लेशमात्र भी प्रभावित हुए बिना श्रीचैतन्य महाप्रभुके द्वारा आचरित तथा प्रचारित, श्रीरूप गोस्वामीके द्वारा स्थापित श्रीचैतन्य मनोभीष्ट तथा श्रीव्रजमण्डल और

विरहका रहस्य

श्रीपाद प्रेमानन्द दास ब्रह्मचारी

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

दूरवर्ती स्थानपर आविर्भाव ही तिरोभाव

हमारे परमाराध्यतम गुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजने श्रीश्रीराधाकृष्णकी नित्यलीलामें प्रवेश किया है। श्रील गुरुदेव अलौकिक जगतमें हैं, किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उन्होंने अपने आश्रितजनोंको छोड़ दिया है। तिरोभावका अर्थ है—दूरवर्त्ती किसी स्थानमें आविर्भाव। यदि श्रील गुरुदेव अपने आश्रितजनोंपर कृपादृष्टि नहीं रखते, तो आश्रितजनोंके द्वारा भक्तिके किसी भी अङ्गका पालन करना सम्भवपर नहीं होता। जो इस बातसे पूर्णतः अवगत हैं कि श्रील गुरुदेव कहीं नहीं गये हैं, उन लोगोंका उत्साह, श्रद्धा, प्रीति और भक्तिके अङ्गोंका पालन करनेकी इच्छा क्रमशः बढ़ती ही रहेगी।

बद्धजीवके प्रति सर्वश्रेष्ठ दया

जब हमारे गुरुवर्ग इस जगतमें आविर्भूत होते हैं, वे व्रज-गोकुलधामसे प्रेमामृत लाकर बद्ध जीवोंमें वितरण करते है—ऐसा कार्य ही बद्ध जीवोंके प्रति सर्वश्रेष्ठ दया है। जब हमारे गुरुवर्ग अलौकिक जगतमें लौट जाते

विरह-शोचक

श्रीद्विजकृष्ण दास ब्रह्मचारी

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

['नदीया-उदय-गिरि' कीर्तनके सुरके अनुसार गान किया जा सकता है]

जय जय पवित्र स्थान, तेयारीपुर नित्य-धाम,
प्रकटिल आमार प्रभुवर।
गङ्गातीरे सुशोभय, हेन स्थान नाहि हय,
सेइ स्थान वन्दि बार बार॥ १॥

परम-पवित्र, नित्य-धाम स्वरूप तिवारीपुरकी जय हो, जय हो, जहाँ मेरे प्रभुवर [नित्यानन्द प्रकाश विग्रह] श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजी आविर्भूत हुए। गङ्गाके तटपर सुशोभित ऐसा रमणीय स्थान अन्यत्र कहीं नहीं है। मैं बारम्बार उस स्थानकी वन्दना करता हूँ॥ १॥

मौनी-अमावस्या दिने, सर्वगुण सुलक्षणे,
कीर्त्तनमुखे हइल आविर्भाव।
अद्भुत सुलक्षण देखि', भक्तगण हइल सुखी,
आनन्दे विह्वल हइल सब॥ २॥

मौनी-अमावस्याके शुभ दिन जब सभी लोग तिथिका सम्मान करते हुए कीर्त्तनमें रत थे, उसी समय समस्त दिव्य गुणों एवं सुलक्षणोंसे मण्डित होकर आप आविर्भूत हुए। आपके अद्भुत सुलक्षणोंको देखकर भक्तजन अत्यधिक प्रसन्नतावशतः आनन्दमें विभोर हो गये॥ २॥

श्रद्धा-कुसुमाञ्जलि

श्रीपरमेश्वरी दास ब्रह्मचारी

[नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

यद्यपि वास्तवमें एक शुद्ध-निर्गुण-वैष्णव ही एक अन्य शुद्ध-निर्गुण-वैष्णवकी महिमाको जान सकता है एवं उस महिमाका गान करके उनका यथायोग्य आदर कर सकता है, जैसा कि शास्त्रोंमें वर्णन है—**"नादेवो देवमर्चयेत्** अर्थात् बिना दैवी गुण प्राप्त किये देवताओंकी पूजा सम्भवपर नहीं है।" एवं—**नावैष्णवो वैष्णवमर्चयेत्** अर्थात् वैष्णव हुए बिना वैष्णवकी पूजा नहीं की जा सकती।" तथापि वैष्णव अदोषदर्शी होते हैं—शास्त्रोंके इस विचारको स्मरण करके ही मैं अपने शिक्षागुरुदेव श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके विषयमें कु कर रहा हूँ।

श्रद्धा-पुष्पाञ्जलि

श्रीपुरन्दर दास ब्रह्मचारी

[नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

श्रीकृष्णलीलाकथने सुदक्षं औदार्य-माधुर्य-गुणैश्च युक्तम्।
वरं वरेण्यं पुरुषं महान्तम् नारायणं त्वं शिरसा नमामि॥

श्रीकृष्णकी लीला-कथाओंका कीर्त्तन करनेमें परम दक्ष, औदार्य (महावदान्यता) तथा माधुर्य (मधुर-स्वभाव) आदि गुणोंसे युक्त, अभीष्टवर प्रदान करनेवालोंमें श्रेष्ठ तथा महान् पुरुष ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके श्रीचरणकमलोंमें मैं नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूँ।

हे विश्वविजयि—आपने पृथ्वीके अधिकांश देशोंमें श्रीगुरु-गौराङ्ग-राधाविनोदविहारीजी तथा उनकी वाणीका प्रचार करके—'**महद्विचलनं नृणां गृहिणां दीनचेतसाम्।**
निःश्रेयसाय भगवन्नान्यथा कल्पते क्वचित्॥ अर्थात् हे भगवन्! दीन गृहस्थोंके नित्य मङ्गलके लिए ही महात्माओंका उनके घरोंमें आगमन होता है, क्योंकि वे गृहस्थी लोग प्रपञ्चोंमें इतने उलझे होते हैं कि वे महात्माओंके आश्रम तक जा भी नहीं सकते। बद्ध जीवोंके कल्याणके अतिरिक्त महात्माओंके आगमनका और कोई हेतु नहीं है।' (श्रीमद्भागवत १०/८/४); '**महान्त स्वभाव एइ तारिते पामर। निज-कार्य नाहि तबु जान तार घर॥** अर्थात् महापुरुष स्वभावसे ही अहैतुकी दयालु होते हैं। अतः अपना किसी प्रकारका स्वार्थ नहीं रहनेपर भी एकमात्र पतितजनोंका उद्धार करनेके लिए ही उनके घरोंमें जाते हैं।' (श्रीचै॰च॰ मध्य ८/३९) तथा '**पृथिविते आछे जत नगरादि ग्राम।**
सर्वत्र प्रचार हइबे मोर नाम॥अर्थात् (श्रीचैतन्य महाप्रभुने कहा—) पृथ्वीमें जितने ग्राम-नगरादि हैं, सर्वत्र मेरा नाम प्रचार होगा।' (श्रीचै॰भा॰ अन्त्य ४/१२६)—इन महद्वाक्योंको सार्थक किया है एवं विश्ववासी कलिहत

विरह-कुसुमाञ्जली

श्रीधीरकृष्ण दास ब्रह्मचारी

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजकी प्रथम-विरह-तिथिके उपलक्ष्यमें लिखित]

अक्ष्णोः फलं त्वादृश-दर्शनं हि,
तनोः फलं त्वादृश-गात्रसङ्गः।
जिह्वाफलं त्वादृश-कीर्त्तनं हि,
सुदुर्लभा भागवता हि लोके॥

(श्रीहरिभक्तिसुधोदय १३/२)

अर्थात् हे वैष्णव! आप जैसे व्यक्तिके दर्शन करना ही इन नेत्रोंका फल है, आप जैसे व्यक्तिका स्पर्श करना ही इस शरीरका फल है, इस जिह्वाका फल भी तभी है जब यह आप जैसे व्यक्तिका गुण कीर्त्तन करती रहे, क्योंकि जगत्में भागवतगणका होना सुदुर्लभ है।

करुणामय भगवान्के द्वारा ही सद्गुरुके रूपमेंशिक्षा-प्रदान

सूर्य अन्धकारको दूर करता है, किन्तु हृदयके अन्धकार अर्थात् अज्ञानको दूर करनेमें सूर्यदेवकी उपयोगिता नहीं कही जाती। गंगाजी हृदयके पापोंको धो डालती हैं, किन्तु पाप-वृत्तिको नष्ट करके उसे समूल उखाड़ फैंकनेमें उनकी उपयोगिता नहीं सुनी जाती। अन्तर्यामी परमात्मा जीवके हृदयमें करणीय और अकरणीयका बोध कराते हैं, तथापि बद्धजीव उस संकेतको समझ नहीं पाते। कभी समझ भी ले तो उसका मनन नहीं कर पाते। करुणामय भगवान् जब जीवकी संसाररूप दुर्गति देखते हैं, तब वे सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर साक्षात् रूपमें जीवको शिक्षा प्रदान करते हैं।

विरहमें श्रद्धा-सुमन

श्रीमान् श्रीनिवास दासाधिकारी (मथुरा)

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके अप्रकट होनेके कु दिन उपरान्त लिखित]

श्रीकेशवजी-गौड़ीय मठ मथुराके भक्त-सेवकोंने परमाराध्यतम गुरु महाराजजीकी ९१वीं आविर्भाव तिथि, मौनी अमावस्या, सम्वत् २०६७, पर पूजनीय प्रेमानन्द प्रभुजीके आनुगत्यमें श्रीजगन्नाथपुरी पहुँचकर श्रील महाराजजीके सान्निध्यमें उनका आविर्भाव-दिवस विशेष धूम-धामके साथ मनानेका कार्यक्रम बनाया गया था। किन्तु भगवान् श्रीश्रीराधाविनोदविहारीजीने हमारी इस अभिलाषाको पूर्ण न कर गुरु महाराजजी को अपने धाममें बुला लिया। सब भक्तवृन्द यह समाचार सुनकर अत्यन्त दुःखित हो गए।

हमारे गुरु महाराजजी बड़े निर्भीक थे। यदि कोई व्यक्ति धर्मके विरुद्ध आचरण करता अथवा कोई गलत बात कहता था, तो वे उसी समय उसका खण्डन करते थे। श्रीगुरुदेव एकनिष्ठ होकर केवल भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभुजी एवं श्रीश्रीराधाविनोदविहारीजीके चरणोंमें भक्तिका ही उपदेश प्रदान किया करते थे। गुरु महाराजजी **'तृणादपि सुनीचेन'** श्लोककी साक्षात् मूर्ति थे। अपने स्वास्थ्यका भी ध्यान नहीं रखकर उन्होंने देश-विदेशमें श्रीचैतन्य महाप्रभुजीके सन्देशका प्रचार-प्रसार करके भक्ति-भागीरथीके प्रवाहको पूरे विश्वमें बहाया है।

उन्होंने गौड़ीय-सम्प्रदायके आचार्यों द्वारा दिखाये गए मार्गपर आधारित अनेकों ग्रन्थोंका अनुवाद एवं सम्पादन किया है। यही गुरु महाराजजीकी अमूल्य निधि है जो हम सेवकोंके जीवनमें दीपककी भाँति ज्योति दिखलाते हुए हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी।

हमारी गुरु महाराजजीके चरणोंमें यही प्रार्थना है कि वे अपनी कृपा एवं आशीर्वाद हमें सर्वदा प्रदान करते रहें, जिससे कि हम अपने मानव जीवनका प्रत्येक क्षण हरि-भक्ति, कीर्तन, स्मरणमें ही व्यतीत कर सकें। U

महा-महावदान्य श्रील गुरुदेव एवं श्रीगुरुदासगणोंके चरणोंमें दुर्भागेकी करुण पुकार

श्रीमान् रामचन्द्र दासाधिकारी

[[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके अप्रकट-लीलाके उपरान्त एवं प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित पुष्पाञ्जलियोंके कतिपय अंश]

मेरे गुरुदेव

परमाराध्यतम ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज श्रील गुरुदेवकी महिमा गान करनेके लिए 'युगाचार्य', 'परमवैष्णव', 'रसिक-वैष्णव', 'रसिक-शिरोमणी' आदि अनेक विशेषण प्रयोग किये जा सकते हैं, किन्तु मेरे लिए तो श्रील गुरुदेव वे ही हैं जो मेरे हृदयमें ही बस गए हैं। जिन्होंने मेरे हृदयपर इतना अधिक अधिकार कर लिया है, मेरे हृदयकी गहराइयोंको इतना स्पर्श कर लिया है कि मैं उनके बिना अपने जीवनकी कल्पना तक भी नहीं कर सकता हूँ। लोग भले ही उन्हें जगद्गुरु कहें, किन्तु मैं उन्हें 'मेरे गुरुदेव' ही कहूँगा।

सर्वश्रेष्ठ प्रार्थनीय वस्तुके शिक्षक

श्रील गुरुदेवसे प्रथम भेंट होनेके कु दिनोंमें उन्होंने मुझे श्रीगुरु-वैष्णव और भगवान्‌के श्रीचरणकमलोंमें प्रार्थना करनेकी शिक्षा प्रदान की। उन्होंने बतलाया कि एक बद्ध-जीवको यह भी नहीं ज्ञात कि गुरु, वैष्णव और भगवान्‌से क्या प्रार्थना करनी चाहिए। उन्होंने मुझे सर्वदा और सर्वत्र यही शिक्षा प्रदान की—"शुद्ध-रसिक-वैष्णवके सङ्गकी प्राप्ति ही सर्वश्रेष्ठ प्रार्थनीय वस्तु है।" तभीसे मैं सर्वदा यही प्रार्थना करने लगा। इस प्रार्थनाके प्रभावसे मैं स्वयंको श्रील गुरुदेवके निकट अनुभव करने लगा और

अन्ततः उनके नीले नेत्रोंकी अथाह गहराइयोंमें तथा उनकी माधुर्यमयी हरिकथाके गम्भीर महासागरमें निमग्न होने लगा। वास्तवमें आत्मा तकको स्पर्श करनेवाले उनके नीले नेत्र तथा 'मौनी' का शब्द करनेवाले अर्थात् मौन होकर भी मुखरित उनके अधर एक बद्ध-जीवके जीवनकी रूपरेखाको ही बदल देते थे।

हार्दिक-पुष्पाञ्जलि

डॉ॰ सञ्जय गौड़* (मथुरा)

[श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

परमाराध्यतम श्रीगुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट त्रिदण्डिस्वामी अष्टोत्तरशत श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके चरणकमलोंका स्मरण एवं उन्हें शत-शत नमनके द्वारा उन चरणकमलोंकी वन्दना करते हुए आज मैं अपने आपको परमधन्य अनुभव कर रहा हूँ। ऐसे एक सद्गुरुके स्मरण, चिन्तन और उनकी कृपाके स्मृतिपटलपर जागृत होने मात्रसे ही मैं स्वयंको गौरवान्वित मानने लगता हूँ। आज भी उनके सान्निध्यमें व्यतीत किये गये क्षणोंका स्मरण मेरे मन और आत्माको सुख पहुँचाता है। उनके द्वारा मेरे सिरपर फेरे गये उनके कोमल करकमलोंके स्पर्शका अनुभव आज भी मेरे नेत्रोंमें अश्रुके रूपमें छलकने लगता है।

.....

* सपरिवार डॉ॰ सञ्जय गौड़, श्रीमती रश्मि गौड़, कुमारी प्रिया गौड़ एवं कृष्ण गौड़

गुरुदेवके स्मरणमें दो शब्द

श्रीआनन्द स्वरूप केला

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित]

भगवान्‌की प्रेरणासे आनन्दधामका निर्माण

मेरा जन्म एक समृद्ध, सम्पन्न एवं धार्मिक परिवारमें हुआ था। बचपनसे ही कृष्ण-पूजा, भक्ति मेरे जीवनमें रचपच गई थी। पारिवारिक मन्दिर होनेके कारण सेवावृत्ति एवं प्रेमभक्तिका मार्ग प्रशस्त होता रहा।

श्रीधाम वृन्दावन आनेपर इस्कॉन मन्दिरका भक्तिभाव मुझे रुचिकर लगता था। इस्कॉनमें रुकनेके कारण वहाँके भक्तोंसे मेरे सम्बन्ध दृढ़ होते गए। वहाँ श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी महाराजके ग्रन्थोंको पढ़नेके बाद मुझमें एक परिवर्तन आया और मैं विचार करने लगा कि सचमुचमें यह मनुष्य जीवन भगवान्‌की भक्ति करनेके लिए ही प्राप्त हुआ है। मैंने उसी दिन दृढ़-सङ्कल्प किया कि अपने पारिवारिक दायित्वोंको सम्पूर्ण करनेके बाद मैं अपनी सम्पत्ति भगवद्सेवामें लगा दूँगा। दैवकी इस प्रेरणासे मुझे बल मिला। मैं इस्कॉनमें शैक्षणिक गतिविधियोंमें कु व्यय करना चाहता था, परन्तु मेरे शुभ-चिन्तकोंने मुझे परामर्श दिया कि आप शैक्षणिक गतिविधियों तथा भगवद्भक्तोंकी सेवा हेतु पृथक रूपसे ही चिर स्मरणीय कोई निर्माण कार्य करें, हम सब आपको पूर्ण सहयोग देंगे।

विरह-वासरपर आन्तरिक पुष्पाञ्जलि

श्रीयुक्ता उमा दासी

[श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके अप्रकट-लीलाके उपरान्त एवं प्रथम विरह-महोत्सवके उपलक्ष्यमें लिखित पुष्पाञ्जलियोंके कतिपय अंश]

कृतज्ञता-ज्ञापन

जिन्होंने मुझे श्रीगुरु-सेवाकी शिक्षा, रूपानुग-विचार, भजन-रहस्य एवं युगल-किशोरकी सेवा-शिक्षा प्रदान की है, जो श्रीमन्महाप्रभुकी धारामें जीवका पारमार्थिक मुख्य लक्ष्य अर्थात श्रीमती राधारानीकी पाल्यदासी होनेके लोभरूपी वासनाका बीज बोनेवाले हैं, उन शिक्षागुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके चरणकमलोंमें अनन्त कोटि दण्डवत् प्रणाम निवेदन करती हूँ। उनके अभय चरणकमलोंमें मेरी पुनः-पुनः प्रार्थना है कि उनके चरणकमलोंके प्रति मेरा सुदृढ विश्वास एवं निष्ठा जागृत हो। श्रीगुरु-वैष्णवोंकी प्रसन्नता ही मेरी एकमात्र लक्ष्य वस्तु हो।

श्रौत-परम्परासे श्रवण किये गये विषयका ही कीर्त्तन

श्रीहरि-गुरु-वैष्णवोंके स्मरणसे विघ्नोंका विनाश होता है। 'वैष्णवेर गुणगान करिले जीवेर त्राण अर्थात् वैष्णवोंका गुणगान करनेसे जीवोंका त्राण होता है।' किन्तु, वैष्णवोंका गुणगान कौन कर सकता है? जिसका सम्बन्ध ज्ञान उदित हुआ है, भजनमें कु उन्नति हुई है, उसीके द्वारा ही वास्तवमें श्रीगुरुदेवकी महिमाका गान सम्भवपर है। तथापि बद्ध-जीवके लिए श्रौत-परम्परामें श्रवण किए गये विषयके कीर्त्तनसे ही हृदय पवित्र होता है और जिह्वा शुद्ध होती है।

स्वयं महिमान्वित

मेरे दीक्षा गुरुपादपद्म नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराजकी कथाके अनुसार हरि-गुरु-वैष्णवोंके गुण-महिमा कीर्त्तन करनेके लिए यदि सातों समुद्र स्याही(Ink) के रूपमें कल्पित हों, हिमालयकी उच्च चोटियाँ लेखनी अर्थात कलमके रूपमें कल्पित हों तथा पृथ्वी कागजके रूपमें कल्पित हो, तब भी उनकी महिमाका सम्पूर्ण रूपसे वर्णन सम्भव नहीं है। गुरु-वैष्णव अपनी-अपनी महिमामें विराजित चन्द्र-सूर्यके समान ही हैं।

अपने शिक्षा-गुरुके मिशनको स्थापित करनेवाले

श्रीयुक्ता श्यामरानी दासी

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके अप्रकट होनेके कु

गुरु एवं शिष्य नित्य-सम्बन्धयुक्त

सर्वप्रथम मैं अपने दीक्षा-गुरुपादपद्म नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त स्वामी महाराजजीके श्रीचरणकमलोंमें अनन्तकोटि दण्डवत प्रणाम निवेदन करती हूँ, तत्पश्चात् अपने शिक्षा-गुरुपादपद्म नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके श्रीचरणकमलोंमें भी अनन्तकोटि दण्डवत प्रणाम ज्ञापन करती हूँ। मैं अपने पारमार्थिक मङ्गलकी जितनी कामना नहीं करती, मेरे दीक्षा एवं शिक्षा-गुरुदेव उससे भी अनन्तगुणा अधिक मेरे मङ्गलकी कामना करते हैं, इसलिए वे मुझे मेरी आत्मासे भी अधिक आत्मीय (प्रिय) हैं। मैंने श्रील गुरुदेवके श्रीमुखारविन्दसे श्रवण किया है कि जिस प्रकार जल और उसकी आद्रता कभी पृथक नहीं होते, जिस प्रकार अग्नि और उसका ताप एवं प्रकाश कभी पृथक नहीं होते, उसी प्रकार सद्गुरु और सत्शिष्य भी कभी पृथक नहीं हो सकते।

परमाराध्यतम् श्रीगुरुदेव श्रील नारायण गोस्वामी महाराज

श्रीमती (डॉ) मधु खण्डेलवाल

[नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके श्रीजगन्नाथ पुरी धाममें अस्वस्थ-लीला-कालमें लिखित]

नमस्ते गुरुदेवाय सर्वासिद्धि प्रदायिने। सर्वमङ्गलरूपाय सर्वानन्द विधायिने॥

परमाराध्यम् श्रीश्रील गुरुदेवकी आविर्भाव तिथिपर उनका स्मरण करते हुये हृदय अत्यधिक रोमाञ्चित हो रहा है। ऐसे परम-भागवत महापुरुषके जन्मके कारण यह मौनी अमावस्या तिथि स्वयं ही धन्य एवं नित्य कृपामयी हुई है। कोटि-कोटि जनोंके हृदयमें व्याप्त अज्ञानरूपी तमको दूर करनेके लिये ही तो श्रीमद् नारायण-भास्कर इस तिथि पर प्रकट हुये हैं। उनकी स्मृतिमात्रसे शीतकालकी-जड़ता दूर होती है, दर्शनमात्रसे हृदयमें अप्राकृत आनन्दकी अनुभूति होती है, संसार-दावाग्नि शान्त होती है और उन्हींकी कृपा-चन्द्रिका शचीपुत्र-स्वरूप-रागसे चित्तको आह्लादित कर राधा-भावसे विभावित करती है।

त्रिभुवन पावन व्यक्तित्व

मुझ जैसे तामसिक बुद्धिवाले बद्ध-जीवके लिये उनकी अलौकिक महिमाका वर्णन सम्भव नहीं है, तथापि यह कहते हुए मुझे अत्यन्त उल्लास हो रहा है कि १९७९ ई. में जब मैंने श्रीगुरुदेवके प्रथम दर्शन किये थे तो उनके रूप और स्वरूपने मुझे आश्चर्यचकित और सफल-मनोरथ कर दिया था। उनका उज्ज्वल मस्तक दिव्य तेजकी अद्भुत गरिमासे मण्डित हो रहा था, अप्राकृत वपु यम-बंधनसे छुटकारा दिलानेको तत्पर थी और गौर-भावसे विभावित वाणी कृष्ण-प्रेम-धनको भर-भर हाथ लुटा रही थी। मैं पुकार उठी थी—हे देव! इस अधम पर कृपा कीजिए, कृपा कीजिए, हे नाथ! त्राहि माम्! पाहि माम्! मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिए।

आन्तरिक-पुष्पाञ्जलि

श्रीमती पूनम देवी दासी

[नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके अप्रकट होनेके कु दिन उपरान्त लिखित]

सांसारिक सम्बन्धोंको तुच्छ अनुभव करा देने वाले

लगभग सतरह वर्ष पूर्व १९९३ ई. में हमारा परम सौभाग्य उदित हुआ जब हमें प्रथम बार श्रील गुरुदेवके दर्शन प्राप्त हुए। तीन वर्षोंसे हम सद्गुरुकी खोजमें थे और अन्ततः गिरिराजजी की कृपासे हमें हमारे गुरुदेवका साक्षात्कार प्राप्त हुआ। श्रील गुरुदेवका इतना ऊँचा व्यक्तित्व था कि हम उसे समझ ही नहीं सकते थे, किन्तु उनकी ममता भरी मुस्कान और 'बेटी' शब्दके उच्चारणने मुझे उनसे ऐसे जोड़ दिया मानो मैं अपने जन्म-जन्मान्तरके पितासे मिली होऊँ। जैसे-जैसे मैं उनसे मिलती गई उनके वात्सल्यसे उनके प्रति श्रद्धा बढ़ती गई और उनकी ममताके समक्ष संसारके सभी सम्बन्ध फीके लगने लगे।

अति सहज रूपमें अत्यन्त उच्च विचारोंमें प्रविष्ट करा देनेवाले

श्रील गुरुदेव बड़े प्रेमसे छोटी-छोटी बाते हमें सिखलाने लगे जिससे हमारी पारमार्थिक उन्नति तो हुई, साथ ही हमें पता भी नहीं लगा कि कैसे हम इतने उच्च सिद्धान्त सरलतासे सीखने लगे। श्रील गुरुदेवने बतलाया तुम ये शरीर नही हो, तुम भगवान्से बिछड़े हुए जीव हो और उनसे दूर होनेके कारण ही दुखी हो—इस बातको समझो। हम कहते कि गुरुदेव हमें तो पहले अपने पाप दूर करने होंगे, तभी हम भगवान्की भक्ति कर पाएँगे, किन्तु गुरुदेव इसका समाधान करते हुए कहते, अरे! मटकेसे हवा निकालना असम्भव है, लेकिन उसमें पानी भरनेसे हवा अपने आप निकल जाएगी। तुम अपने प्रयाससे पापोंको दूर नहीं कर पाओगे, लेकिन हरिनाम करनेसे तुम्हे जब भगवान्से प्रेम होने लगेगा, तब तुम्हारे पापोंका तो कहना ही क्या, पाप करनेकी वासना तक भी अपने आप दूर होने लग जाएगी। हमने गुरुदेवसे पूछा कि हमें भगवान्से प्रेम कैसे होगा? इसके उत्तरमें गुरुदेवने कहा कि प्रेम होनेके लिए पहले सम्बन्ध जोड़ना पड़ता है और फिर जिस वस्तुमें हम energy लगाते है उसी वस्तुसे हम attach हो जाते हैं। जब सम्बन्धके अनुकूल हम उस वस्तुकी सेवा करते हैं, तभी हमारी ममता उससे जुड़ती है और इसी मेरेपनकी भावनासे प्रेम होता है। कृष्ण स्वयं भगवान होकर भी इसी ममताके कारण व्रजवासियोंके प्रेमके और विशेषकर गोपियोंके प्रेमके वशीभूत हो गए। तुम्हें भी व्रजवासियोंकी भाँति ही कृष्णकी सेवा करने की परिपाटी सीखनी होगी। तब तुम्हारा जीवन धन्य हो जाएगा। एक दिन हमने पूछा, "गुरुदेव! प्रेम होता क्या है?" तब श्रील गुरुदेवने कहा, "भाव टूटनेका कारण उपस्थित होनेपर भी जो

वाणी-वैशिष्ट्य सम्पद्—४

[श्रील गुरुदेव और विरह-तत्त्व]

विरह-भजन

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज द्वारा प्रदत्त वक्तृताओंसे सङ्कलित

विरह—प्रेमकी एक अपूर्व अवस्था

सर्वशक्तिमान् श्रीभगवानके साथ उनकी स्वरूप शक्तिका अविच्छेद्य सम्बन्ध है, **'शक्तिशक्तिमतोरभेदः** अर्थात् शक्ति और शक्तिमानमें अभेद है' (वेदान्तसूत्र)। अतः विच्छेद नामक किसी भी क्रियाका वहाँ स्थान नहीं रहने पर भी श्रीभगवानकी अघटन-घटन-पटीयसी लीलाशक्ति एक अपूर्व रसवैचित्र्य उत्पन्न करनेके लिए नित्य-मिलनके बीच भी विच्छेद या विरह नामक एक क्रियाको संघटित कराती है। यह विरह ही प्रेमकी एक अपूर्व अवस्था है।

प्रेमकल्पतरुके प्रथम अङ्कुर श्रील माधवेन्द्रपुरीपादने अपनी सिद्ध अवस्थामें माथुरविरहिणी श्रीराधाजी की विलापसूचक उक्तिको इस अपूर्व श्लोकमें प्रकाशित किया है—

अयि दीनदयार्द्रनाथ, हे मथुरानाथ, कदावलोक्यसे।
हृदयं त्वदलोककातरं दयित भ्राम्यति किं करोम्यहम्॥

(चै॰च॰ मध्य ४/१९७)

[अर्थात् हे दीनदयार्द्रनाथ! हे मथुरानाथ! कब तुम्हारे दर्शन प्राप्त करूँगी? तुम्हारे दर्शनके अभावमें मेरा कातर हृदय अस्थिर हो गया है! हे दयित! अब मैं क्या करूँ?]

श्रीकृष्णके मथुरा जानेपर उनके विरहमें श्रीमती राधिकामें महाप्रेम (महाभाव) का जो प्रकटन हुआ था, उस भावके अनुगत होकर जो भजन है, वही सर्वोत्तम है।

(१) कृष्ण विरहमें कातर दीन गोपियोंके सम्बन्धमें दयासे द्रवीभूत, सरस हृदयवाले श्रीकृष्ण

विरहमें अतिमर्त्य चरित्रकी कतिपय स्मृतियाँ

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

[श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराजजीकी प्रथम विरह-तिथिके उपलक्ष्यमें
वर्ष २००५ में लिखित]

जन्मकाल एवं मठवास

मैंने पूज्यपाद वामन महाराजजीकी माता परम साध्वी और विदूषी श्रीमती भगवती देवीके मुखसे बहुत दिन पहले सुना है कि उनका जन्म पौष मासमें कृष्ण पक्षकी नवमी तिथि (२३ दिसम्बर १९२१ ई.) को पूर्व बंगाल (वर्तमानमें बंगलादेशमें) के खुलना जिलेके पीलगञ्ज गाँवमें हुआ था। उनके बाल्यकालका नाम सन्तोष कुमार था। उनके पिताजीका नाम श्रीसतीशचन्द्र था। श्रीसतीशचन्द्रने हमारे परमाराध्यतम श्रीगुरुपादपद्म ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजसे दीक्षा ग्रहण की थी तथा दीक्षाके बाद उनका नाम

श्रीगुरुपादपद्मके अन्तरङ्ग सेवकके विरहमें मुग्धता

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज[१]

[श्रीपाद अनङ्गमोहन ब्रह्मचारीने २ मार्च १९५०, फाल्गुनी त्रयोदशी तिथि, बृहस्पतिवारको दोपहरके दो बजके तीन मिनटपर हम सबको चिरदिनके लिये त्यागकर स्वधाममें गमन किया है।

अन्तिम समयमें वे मद्राससे सात कोस दक्षिणकी ओर 'टाम्बरम' नामक एक अत्यधिक स्वास्थ्यकर पर्वतीय स्थानपर जीवनके अन्तिम छह मास तक अवस्थान कर रहे थे। श्रीपाद अनङ्ग मोहन ब्रह्मचारीके प्रति अत्यन्त स्नेहशील पूजनीय भक्तप्रवर श्रीपाद त्रिगणातीत ब्रह्मचारी और श्रीयुत गौर-नारायण दासाधिकारीने, अपने जीवनको दाँवपर लगाकर श्रीपाद अनङ्ग मोहन ब्रह्मचारीके अन्तिम समयमें सेवा करनेका दायित्व ग्रहण और सुयोग प्राप्त करके वहाँसे पत्रके द्वारा जो संवाद दिया है, उसे हम यहाँपर मुद्रित करके इस अत्यधिक कष्टकर अप्रकट-लीलाकी वार्त्ताका ज्ञापन कर रहे हैं।]

॥ श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः ॥

टाम्बारम्

२/३/५०

पतित-पावन श्रीगुरुदेव! आपके अभय चरणकमलोंमें सकातर दण्डवत्।

प्रभो, आपने जिस धन [श्रीअनङ्गमोहन प्रभु] को रक्षा करनेके लिये दिया था, उसकी रक्षा करनेमें अक्षम होनेके कारण आज मैं उसे खो बैठा हूँ। वे आज प्रातःकाल छह बजेसे लेकर दस बजे तक संज्ञाहीन (अचेतन) थे। उन चार घंटोंमें उन्होंने केवल "हा कृष्ण, गौरसुन्दर, वृन्दावनमें मुझे कृष्ण बुला रहे हैं, कृष्ण कहाँ हैं, क्या वे मेरे हृदयमें हैं; गुरुदेव कहाँ है; बाबा[२] कहाँ हैं, [आपको उद्देश्य करके उन्होंने कहा—] आप मेरा अपराध मत लेना; मुझपर कृपा करना"—इत्यादि वचनोंका ही उच्चारण किया। दस बजे उन्हें चेतना आयी। एक बजे से पुनः उनकी नाड़ी कम होने लगी तथा वे पुनः उपरोक्त वचनोंका उच्चारण करने लगे। उन्होंने ढ़ाई बजे गोलोक वृन्दावन-धाम गमन (प्रस्थान) किया है।

उनमें किसी प्रकारकी वेदना, मुख-विकृति इत्यादि नहीं देखी गयी तथा उन्होंने अत्यन्त शान्त-प्रशान्त भावसे प्रयाण किया है। उनके द्वारा भगवान्के नामोंका उच्चारण, उनका शान्त-प्रशान्त भाव और आपके प्रति उनकी भावनाओंको देखकर हस्पतालके सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये हैं एवं उनके दर्शन करके अपने भाग्य की प्रशंसा कर रहे हैं।

---

[१] श्रीपाद अनङ्गमोहन ब्रह्मचारीके गोलोक वृन्दावन-धाममें प्रयाण करनेपर श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको संवाद पहँचाने हेतु श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज द्वारा 'टाम्बारम्' से लिखित पत्र एवं उन्हींके द्वारा 'आचार्य-केशरी' में श्रीअनङ्ग-मोहन ब्रह्मचजारीके विषयमें लिखित श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजकी जीवनी वचनावली।

[२] श्रीअनङ्गमोहन ब्रह्मचारी अपने गुरुदेव श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको बाबा कहकर भी पुकारा करते थे।

हम भी आपके द्वारा प्रदत्त इस दुर्लभ सेवाको प्राप्त करके धन्य हुए हैं। इस प्रकारका देह-त्याग जगत्में देखा नहीं जाता। हम उनकी पुण्य-स्मृति—उनके शरीरके दाह संस्कारके उपरान्त पुष्पों (राख) को एकत्रित करके उस—की रक्षा-हेतु उनके प्रिय स्वास्थकर स्थान सिधाबाड़ी ग्रामके लिये अभी प्रस्थान करेंगे।

आप कृपापूर्वक सूचित कीजिएगा कि आप सिधाबाड़ीमें कब शुभागमन कर रहे हैं। मन अस्थिर हो गया है, व्यग्रतापूर्वक आपके आगमनकी प्रतीक्षा करूँगा, आपके दर्शनसे अशान्ति दूर करके आपकी सेवामें पुनः एकान्तचित्तसे आत्म-नियोग कर पाऊँगा। शीघ्र ही आपका कृपारूपी पत्र और दर्शन प्राप्त करनेकी आशा करता हूँ। इति—

आपका
गौरनारायण

[श्रीपाद अनङ्ग मोहन ब्रह्मचारी एक आदर्श गुरुसेवक थे। वे अपने श्रीगुरुपादपद्मके नित्यसङ्गी, दाँये हस्त-स्वरूप तथा सब समय उनके निकट छायाकी भाँति रहकर सदैव उनकी सुख-स्वच्छन्दता और अनेक प्रकारकी विश्रम्भ सेवाओंमें निमग्न रहते थे। वे अपने सरल अमायिक (अप्राकृत) व्यवहार और निष्कपट सेवासे वैष्णवोंके विशेष आदर और स्नेहके पात्र बन गये थे। सेवाकार्योंमें नियुक्त रहते समय एवं अन्यान्य समयमें भी उन्हें सदैव प्रफु
मुस्कराता हुआ श्रीमुखमण्डल सभीके चित्तको आकर्षित करता था। उनके जैसे आदर्श गुरु-सेवकके ज्वलन्त दृष्टान्त अत्यधिक विरले हैं। उनकी कष्ट सहन करनेमें अत्यधिक सहिष्णुता हम सभीके लिए आदर्श है।

श्रीपाद अनङ्गमोहन ब्रह्मचारीके विरहमें श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके समस्त सदस्य, विशेष करके नगण्य गुरुभ्राता—हम उनके गुणोंसे मुग्ध होकर विशेष रूपसे उनका अभाव अनुभव कर रहे हैं एवं उनकी असमय मात्र इक्कीस वर्षकी आयुमें महाप्रयाणकी कथाका स्मरण करके मोहित हो रहे हैं।

उनका श्रीगुरु-वैष्णव सेवाका ज्वलन्त आदर्श हमारा पथ-प्रदर्शक हो और हमें सदैव सेवामें अनुप्राणित करे—यही प्रार्थना है।]

(श्रीगौड़ीय पत्रिका, वर्ष-२, संख्या-२ से अनुवादित)

❖ ❖ ❖ ❖

मैं (श्रीभक्तिवेदान्त नारायण महाराज) श्रीअनङ्गमोहन ब्रह्मचारीके परलोक गमनके समय स्वयं उनके निकट उपस्थित था। मैंने कभी भी उनका मुख मलिन नहीं देखा। वे सब समय भगवन्नाम करते हुए प्रसन्न रहते थे। वे हमलोगोंसे नियमित रूपमें श्रीमद्भागवत, श्रीचैतन्यचरितामृतका प्रीतिपूर्वक श्रवण करते थे। उनके मृदु व्यवहारसे वहाँके छोटे-बड़े सभी डॉक्टर बड़े आकर्षित थे। परलोक गमनके दिन वे हठात् उच्चारण करने लगे—"मुझे श्रीराधाकृष्ण वृन्दावनमें बुला रहे हैं। जय श्रीराधे, जय श्रीकृष्ण, हा गौरचन्द्र, हा नित्यानन्द प्रभु, हा गुरुदेव।" मैंने उनसे हाथ जोड़कर निवेदन किया—"प्रभो! आप मेरे ऊपर भी कृपा करें। मुझे भी वृन्दावनमें बुलाना।" उन्होंने हा राधे, हा कृष्ण कहते हुए अन्तिम श्वास ली। सभी एकत्रित चिकित्सक एवं उपस्थितजन आश्चर्यचकित रह गये।

मैंने बड़ी गम्भीरतासे विचार किया कि यदि अजामिल अपने पुत्रके लिए 'नारायण'-नाम (नामाभास) उच्चारणकर कष्टमय जन्म-मृत्युसे मुक्त होकर वैकुण्ठ-धामको प्राप्त कर सकता है, तब फिर परम गुरुनिष्ठ, सदा-सर्वदा अपराधोंसे रहित, सम्बन्धज्ञानके साथ कृष्णनामका कीर्तन करनेवाले तथा अपने अन्त समयमें सज्ञान अवस्थामें 'हा राधे, हा कृष्ण' तथा 'राधाकृष्ण मुझे वृन्दावनमें बुला रहे हैं'—ऐसा उच्चारण करनेवाले इस उच्चकोटिके गुरुसेवककी कैसी गति होगी? वास्तवमें उन्हें अवश्य ही व्रजधामकी प्राप्ति हुई है। हमलोग पहले इस महान भक्तके सम्बन्धमें कभी भी ऐसी कल्पना नहीं कर सकते थे। इनका जीवन धन्य है तथा इनकी गुरुसेवा सार्थक है।

परमाराध्यतम श्रील गुरुदेवने अपने प्रिय सेवक अनंगमोहन ब्रह्मचारीकी स्मृतिरक्षाके लिए सिधावाड़ीमें सिद्धावाटी गौड़ीय मठकी स्थापना की। वहाँ अभी तक श्रीविग्रहकी नित्य सेवा-पूजा, पाठ-कीर्तन चलता आ रहा है तथा प्रतिवर्ष श्रीअनङ्गमोहन प्रभुकी स्मृतिमें विरहोत्सव मनाया जाता है।

[आचार्य-केशरी श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीकी जीवनीसे संग्रहीत]

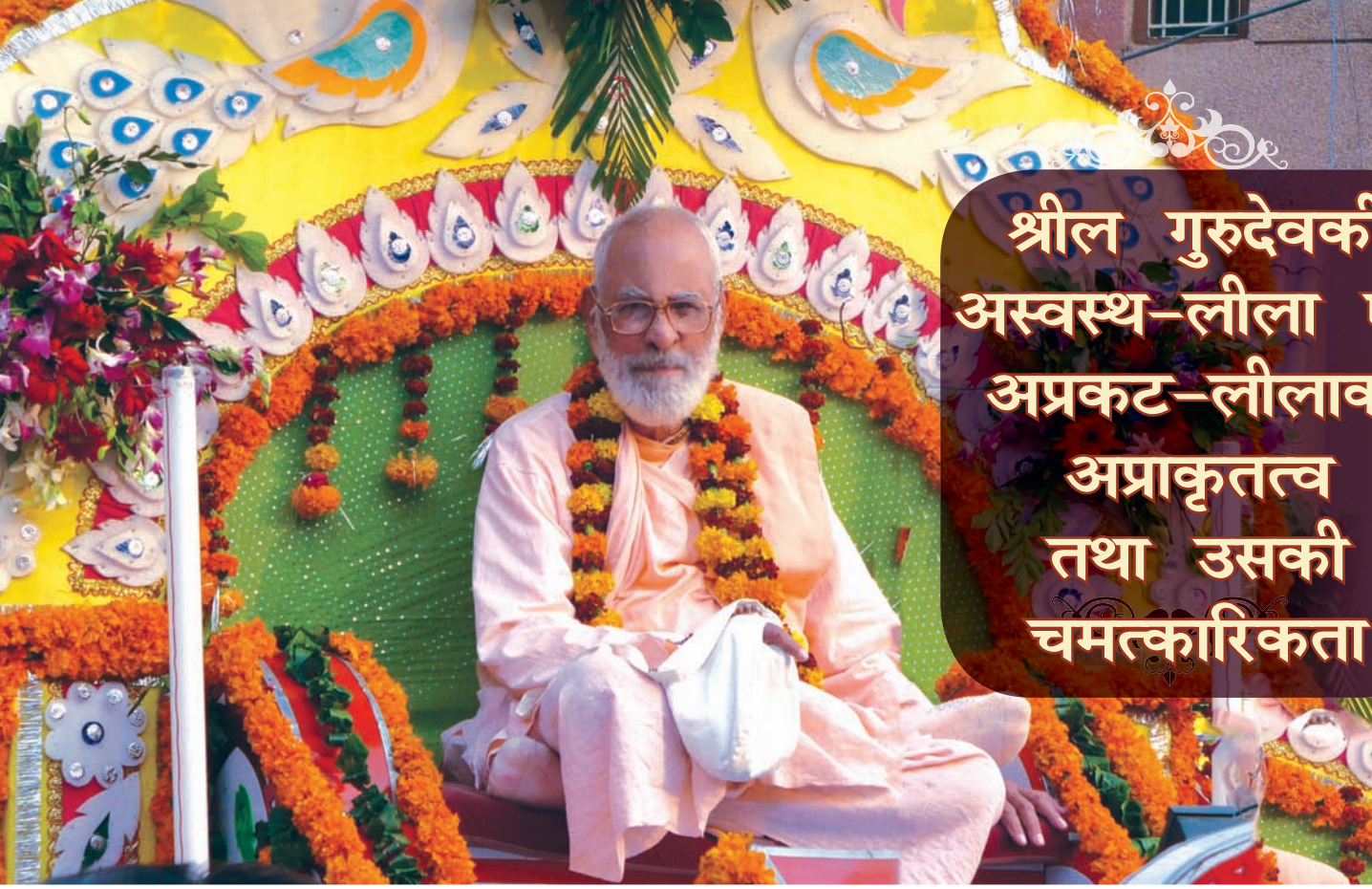

श्रील गुरुदेवकी अस्वस्थ-लीला एवं अप्रकट-लीलाका अप्राकृतत्व तथा उसकी चमत्कारिकता

[नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके वचनामृतके आधारपर लिखित]

"**मङ्गल श्रीगुरु-गौर**[१] अर्थात् श्रीगुरु और श्रीगौर सर्व-मङ्गलमय हैं", इसलिए उनका आविर्भाव, तिरोभाव एवं उनके द्वारा इस जगत्में प्रकाशित समस्त लीलाएँ भी परम मङ्गलमय हैं। यदि हम इन सब लीलाओंको किसी अन्य दृष्टिकोणसे अर्थात् अमङ्गलमय रूपमें देखनेकी चेष्टा करेंगे, तो हम कभी भी श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज द्वारा कथित उक्त पदके यथार्थ तात्पर्यको समझ नहीं सकेंगे।

यदि हम श्रीगुरुकी आविर्भाव-लीला तथा आविर्भावके उपरान्त उनके द्वारा जप्रकट कालमें प्रकाशित अन्य-अन्य लीलाओंको अपने अधिकार या योग्यताके अनुसार समझनेका प्रयास करेंगे, तो हम उन लीलाओंको बाहरी दृष्टिकोणसे ही समझनेमें बाध्य होंगे। उसी प्रकार उनके द्वारा प्रकाशित की गयी लीलाओंमें न केवल हमारा, अपितु, सम्पूर्णजगत्का क्या मङ्गल निहित है, उसे भी समझनेमें पूर्णतः असमर्थ होंगे। अतः श्रीगुरुदेवकी कृपा प्राप्त होनेसे ही श्रीगुरुदेव द्वारा प्रकाशित लीलाओंको पूर्णरूपसे समझना सम्भव है।

अतः यदि श्रीगुरुदेवके आविर्भाव और श्रीगुरुदेवके द्वारा प्रकटकालमें प्रकाशित अतिमर्त्य लीलाओंको ही हम वस्तुतः नहीं समझ पाते हैं, तब यदि हमें शास्त्रोंके प्रमाण या श्रीगुरु और श्रेष्ठ वैष्णवोंके वचनरूपी प्रमाण नहीं मिले—तब श्रीगुरुदेव द्वारा प्रकाशित अस्वस्थ-लीला और उनकी अप्रकट-लीलामें छिपी परम-मङ्गलमयताको समझ पानेमें हमारी अयोग्यताके विषयमें तो फिर कहना ही क्या? यदि हम श्रीगुरु और महाभागवत वैष्णवोंकी बाहरी अस्वस्थता तथा उनकी अप्रकटलीला और ऐसी लीलाओंमें अन्तर्निहित वास्तविक उद्देश्य और अगाध करुणाका दर्शन नहीं कर सकेंगे, तब हम अपने नित्य-कल्याणसे सर्वदा वञ्चित रह जाएँगे।

श्रीगुरु पूर्णरूपसे अतिमर्त्य अप्राकृत महापुरुष हैं। वे कभी भी कर्मफल-बाध्य जीवोंकी भाँति भौतिक दुख या रोगसे पीड़ित नहीं होते हैं तथा श्रीगुरुके इस जगतमें प्रकट होने तथा इस जगतसे अप्रकट होनेका कोई लौकिक कारण भी नहीं होता है। बद्ध-जीव जन्म-जन्मान्तरमें भौतिक कारणोंसे भौतिक शरीरोंको पुनः पुनः धारण करते तथा त्यागते हैं। अतः श्रीगुरुकी ऐसी अस्वस्थ लीला बद्ध-जीवोंकी अवस्थासे पूर्णतः विपरीत है।

.....

[१] श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज द्वारा लिखित मङ्गल-आरतीका पद।

अवनीर सुसम्पद

—श्रील नरोत्तम दास ठाकुरकृत 'प्रार्थना' का पद

...हृदयके सुसम्पद

–जीवोंके नित्य–कल्याणके लिए नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद भी अधिक बार सम्पूर्ण विश्वमें प्रचार हेतु विचरण किया।

कथामृत एवंश्री हरिनाम संकीर्तन यज्ञ
गौड़ीय संप्रदायाचार्य, त्रिदण्डी स्वामी
बजे से 7:00 बजे तक
दिनांक:-19 सितम्बर
वेदान्त समिति, जयपुर

SPEAKER
PRESIDENT
SECRETARY

श्रील गुरुदेवका प्रथम-वर्षपूर्ति विरह-महोत्सव

जगद्गुरु नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोवामी महाराजके अन्तरङ्ग परिकर नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजका प्रथम-वर्षपूर्ति विरह-महोत्सव ३ पौष, कृष्ण-नवमी, सोमवार, १९ दिसम्बर २०११ को उनकी अप्राकृत समाधि-स्थली श्रीश्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, श्रीधाम नवद्वीपमें अत्यन्त आदर एवं यत्न सहित श्रीगौड़ीय-वैष्णव रीतिके अनुसार अनुष्ठित हुआ।

विरह-महोत्सवसे दो दिन पूर्व अर्थात् शनिवार, १७ दिसम्बर २०११ को श्रील गुरुपादपद्मके चरणाश्रित देश-विदेशसे समागत भक्तों द्वारा श्रीश्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, श्रीनवद्वीपसे एक विराट नगर-सङ्कीर्तनका आयोजन किया गया जो नवद्वीप शहरके विभिन्न मार्गों द्वारा होता हुआ सर्वप्रथम श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठमें परमगुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज एवं परमाराध्य नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराजकी समाधिके दर्शन एवं परिक्रमा करनेके बाद गङ्गाजीके मणिपुरी घाटसे होते हुए परमाराध्य नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त त्रिविक्रम गोस्वामी महाराजकी समाधि एवं अन्तमें परमाराध्य नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रीमद्भक्तिरक्षक श्रीधर गोस्वामी महाराजके समाधि-मन्दिरके दर्शनके उपरान्त श्रीश्रीकेशवजी गौड़ीय मठमें समाप्त हुआ। नगर-सङ्कीर्तनमें श्रील गुरुदेवका पुष्प-सुसज्जित आलेख्य एक सुसज्जित वाहनपर विराजित था। इस नगर-सङ्कीर्तनमें अनेकानेक संन्यासी, ब्रह्मचारी तथा विभिन्न-स्थानोंसे आये श्रद्धालु गृहस्थ भक्तोंने योगदान दिया।

विरह-संवाद

अत्यन्त दुःखित हृदयसे सूचित किया जाता है कि गत ७ जनवरी, २०१२ ई. शुक्रवार, पौष (नारायण) मासकी शुक्ला-त्रयोदशी तिथिको जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकु
शिष्य ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिकु सन्त गोस्वामी महाराजने अपने चरणाश्रित सेवकोंको तीव्र विरहसमुद्रमें निमज्जितकर स्वेच्छापूर्वक श्रील भक्तिविनोद ठाकु
गोस्वामी ठाकु
कोलकातामें रात्रि एक बजे श्रीश्रीराधाकृष्णकी नैश-लीलामें प्रवेश किया है।

श्रील महाराजजीने अपने प्रकट-कालमें ही इच्छा व्यक्त की थी कि उनके अप्रकटके उपरान्त उन्हें खड़गपुर जिलेके अन्तर्गत केशीयाड़ीमें समाधि प्रदान की जाय। श्रील महाराजजीकी इसी इच्छाके अनुसार उसी दिन अपराह्न कालमें उनके दिव्य-कलेवरको पुष्प सुसज्जित वाहन द्वारा केशीयाड़ी स्थित उनके द्वारा प्रतिष्ठित पचास वर्षसे प्राचीन श्रीश्रीगौराङ्ग मठमें लाया गया।

श्रील महाराजजीके दिव्य कलेवरके केशीयाड़ी पहुँचनेपर विरहमें क्रन्दनरत अनेकानेक भक्तोंने सङ्कीर्तन एवं पुष्पवर्षाके द्वारा उनकी अगवानी एवं स्वागत किया। श्रील महाराजजीके आगमनसे पूर्व भक्तोंने श्रील महाराजजीकी समाधि-स्थलीको पुष्पों द्वारा

विशेष-सूचना

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गके असीम कृपा-आशीर्वादसे 'श्रीश्रीभागवत-पत्रिका' अपने सम्पूर्ण-अष्टम वर्षमें श्रील गुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके द्विमासिक विरह-विशेषाङ्कोंके रूपमें एक साथ दो-दो संख्याओंमें प्रकाशित हुई हैं। इस महान सेवा कार्यको सुष्ठु रूपमें सम्पादित करनेके लिए श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाके सहृदय पाठकों एवं शुभचिन्तकोंका विशेष योगदान रहा है, अतः हम उन सबके प्रति अपनी आन्तरिक कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं। श्रीगौर-पूर्णिमाके उपरान्त 'श्रीश्रीभागवत-पत्रिका' अपने नवम-वर्षसे पुनः मासिक रूपमें प्रकाशित होगी।

श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाके अष्टम वर्षके विरह-विशेषाङ्कोंके रंगीन मुद्रण एवं सचित्र डिजाइनसे उत्साहित होकर हमारे अनेकानेक पाठकोंने पुनः पुनः आग्रह किया है कि भविष्यमें भी इसी प्रकार अच्छे कागजपर श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाका रंगीन सचित्र प्रकाशन होनेसे बहुत आनन्दका विषय होगा।

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गकी विशेष कृपा एवं पाठकोंके बारम्बार निवेदनसे अनुप्राणित होकर ही हमने उनके इस अनुरोधको स्वीकारकर भविष्यमें भी श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाके रंगीन एवं सचित्र प्रकाशनका निर्णय लिया है। श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाके उक्त रूपमें प्रकाशन हेतु आगामी नवम वर्षसे पत्रिकाका सेवा-शुल्क कु

वार्षिक	(१२ अंक) —	` ३००	
पञ्चवार्षिक	(६० अंक) —	` १,२००	
आजीवन सदस्य	—	` ७,५००	(विशेष ग्रन्थ उपहार)
संरक्षक सदस्य	—	` १०,०००	(विशेष ग्रन्थ उपहार)
विदेश-वार्षिक	—	$ ३५	
पञ्चवार्षिक	—	$ १२०	

हमें आशा है कि हमारे सभी पाठकगण श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाके स्वरूप और कलेवरको आकर्षक बनानेके इस प्रयासमें हमें पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

श्रीहरि-गुरु-वैष्णव सेवाभिलाषी
'श्रीश्रीभागवत-पत्रिका' का सम्पादक एवं कार्यकारी मण्डल

श्रील गुरुदेवके प्रति अपनी कृतज्ञताका स्मरण करते हुए श्रील गुरुदेवके चरणाश्रित (१) श्रीपाद भक्तिवेदान्त तीर्थ महाराज, (२) श्रीमदनमोहन गौड़ीय मठ, बङ्गलोरके भक्तवृन्द, (३) श्रीआनन्द स्वरुप केला (आनन्द-धाम, वृन्दावन) (४) श्रीपुरुषोत्तम दास (मुम्बई) (५) श्रीप्रेमदास (मथुरा) ने इस विरह-विशेषाङ्क संख्या-६के प्रकाशन हेतु आर्थिक योगदानके द्वारा विशेष सेवा-सौभाग्यको वरण किया है। इन सबकी विशेष सेवाके लिए श्रील गुरुदेव अपने नित्यधामसे इनपर विशेष कृपा वर्षित करें—यही श्रील गुरुदेवके अभय चरणकमलोंमें विनम्र प्रार्थना है।

'श्रीश्रीभागवत-पत्रिका' का सम्पादक एवं कार्यकारी मण्डल

श्रील गुरुदेवका समाधि पीठ

RNI NO. - UPHIN/2004/13352
Postal Regn. No. - Mathura-13/2010-2012

"वैष्णवोंका 'विरह' और 'मिलन'—दोनों एक ही तात्पर्यपर है। श्रीगुरुपादपद्मकी 'विरह-तिथि' अनुग्रहपूर्वक भौम-जगतमें वर्षमें एक बार उपस्थित होकर गुरुसेवकोंको अपनी सेवाका पुनः अवलोकन करानेका सुयोग प्रदान करती है एवं श्रील गुरुपादपद्मक" द्वारा प्रदर्शित और आचरित शुद्ध भक्ति-मार्गमें अग्रसर होनेकी प्रेरणा प्रदान करती है। यह 'विरह-महोत्सव' हमारे जीवनमें प्रकाश-स्तम्भ है—जो घोर अन्धकार और विपत्तिकी अवस्थामें भी हमारा मार्गदर्शन कराक" हमें पथ-भ्रष्ट नहीं होने देता।"

—श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

गौड़ीय वेदान्त प्रकाशन
GVP